स्कूल ऑफ इवेन्जलिज़म

पाठ्यक्रम

यीशु मसीह का जीवन

COPYWRITE 2017- EDUCATIONAL RESOURCES
PERMISSION TO FREELY COPY AND DISTRIBUTE,
BUT PLEASE CREDIT SOURCE

यीशु मसीह का जीवन

मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना रचित सुसमाचारों से

इस पाठ्यक्रम का उपयोग कैसे करें:

1. परिवर्तन:

   - इस पाठ्यक्रम में, विद्यार्थियों को यीशु मसीह के उत्साही अनुयायियों में परिवर्तित करने की शक्ति है। प्रत्येक वृत्तांत विद्यार्थी के जीवन को परिवर्तित करने में लिए शक्तिशाली है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि यह न मात्र उसके ज्ञान को ही परन्तु उसकी दृढ़ विचारधारा को भी, उसके मन को ही नहीं परन्तु उसके हृदय को भी परिवर्तित कर सकता है। अत: जो भी आप करते हैं उसका केन्द्र पवित्र आत्मा को होने दें।

2. खोज प्रक्रिया को सुगम बनाएं:

   - शिक्षक को ऐसे अच्छे प्रश्न करने के द्वारा शिक्षण को सुगम बनाना चाहिए जो विद्यार्थियों को उत्तरों की खोज की ओर लेकर जाएं। और जहां भी सत्य से भटक जाना संभावित हो वहां शिक्षक को, शिष्टतापूर्वक विचार-विमर्श के द्वारा, विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना चाहिये कि उनके लिए जीवन के प्रश्नों के उत्तरों का पता लगाने में सहायता करें।

3. कक्षा प्रक्रिया:

   - चरण 1: प्रत्येक अध्याय के परिचय को पढ़ें।
   - चरण 2: कक्षा में आवश्यकता पढ़ने पर, बाइबल से दिये गये भाग को तीन बार ऊँची आवाज़ में पढ़ें। सभी बाइबल पाठ को पढ़ना है। यदि शिक्षक अतिरिक्त सहायक शास्त्रपाठ का समर्थन करते हैं तो उन्हें उसे भी पढ़ना है।
   - चरण 3: विद्यार्थियों से वह वृत्तांत बताने को कहें। वृत्तांत की पंक्ति और विषय-सूची को प्रमाणित तथा स्पष्ट करने के लिए प्रश्न पूछें। सही तथ्य पाने के लिए शिक्षक विचार-विमर्श में सहायता करें।
   - चरण 4: विद्यार्थियों को 3 से 5 के छोटे समूहों में विभाजित करें और उनसे समूह चर्चा के प्रश्नों पर विचार-विमर्श करने कहें। इसके पश्चात् उन्हें

पहली स्थिति में वापस लाकर उनसे बड़े समूह में अपनी अपनी खोज़ पर विचार-विमर्श करने कहें।

- चरण 5: विद्यार्थियों को अलग-अलग गतिविधि दें। समय समय पर गतिविधि की समीक्षा करते रहें। विद्यार्थियों को श्रेणी निर्धारण (उसके वृद्धि प्रदर्शन संकेत) के आधार पर ग्रेड दें।

4. हृदय का हिस्सा:

- पाठ्यक्रम को कालक्रमानुसार तैयार किया गया है और इसी कारण विद्यार्थी 30 वृत्तांत सुनाने के योग्य हो पाएंगे। इन वृत्तांतों को विद्यार्थी के जीवन का भाग बनने को प्रत्सोहित करें, कि वे उसके हृदय हिस्सा हो जायें।

विषय सूची

विषय-वस्तु का परिचय
पाठ 1 : यीशु का पूर्व अस्तित्व और वंशावली.....6
पाठ 2: यीशु का जन्म.....8
पाठ 3: मिस्र को भाग जाना और यीशु का बचपन.....10
पाठ 4: यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मार्ग तैयार करता है.....12
पाठ 5: यीशु का बपतिस्मा.....13
पाठ 6: यीशु की परीक्षाएं.....14
पाठ 7: यीशु अपने शिष्यों को चुनता है.....16
पाठ 8: पानी का दाखरस बनाना.....18
पाठ 9: नीकुदेमुस यीशु से मिलता है.....20
पाठ 10: चार मित्र और उनका विश्वास.....22
पाठ 11: पहाड़ी उपदेश
पाठ 12: संगमरमर का पात्र वाली स्त्री.....25
पाठ 13: यीशु तूफान को डांटता है.....27
पाठ 14: यीशु पानी पर चलता है.....29
पाठ 15: झील के निकट पागल व्यक्ति.....30
पाठ 16: भले सामरी का दृष्टांत.....32
पाठ 17: यीशु का रूपान्तरण.....34
पाठ 18: पांच हज़ार को भोजन खिलाना.....36
पाठ 19 लाज़र को पुन: जीवन मिला.....38
पाठ 20: धनी युवक शासक.....40
पाठ 21: यरीहो के निकट ज़क्कई का परिवर्तन 41
पाठ 22: अन्धा बरतिमाई.....43
पाठ 23: विजयी प्रवेश.....45
पाठ 24: उपरौठी कोठी.....47
पाठ 25: यीशु की गिरफ्तारी और जांच.....49
पाठ 26: क्रूस.....51
पाठ 27: उसका गाड़ा जाना.....53
पाठ 28: प्रभु जी उठा है.....54
पाठ 29: पुनरुत्थान के बाद चालीस दिन.....56
पाठ 30: उसका स्वर्गरोहण.....59

विषय-वस्तु का परिचय

राजनैतिक:

प्रथम शताब्दी में, यीशु के जीवन काल में, इस्राएल पर रोमियों का शासन था। इस्राएल पर एक स्व-शासित रोमी सरकार का शासन था, जिसका प्रमुख हेरोदेस था जो रोमी शासक सम्राट कैसर के अधीन था। रोमी सरकार ने कठोर नियंत्रण बना रखा था, परन्तु धार्मिक स्वतंत्रता, राजनैतिक स्वतंत्रता और वैचारिक स्वतंत्रत्रता दी हुई थी। धार्मिक स्तर पर इस्राएल में दो संरचनायें शासन करती थीं: फरीसी, जो ''लोकदल'' से थे और सदूकी, जो धनी तथा रूढ़ीवादी अगुवे थे। फरीसियों ने व्यवस्था और इस्राएल के पितरों की परम्पराओं को सिखाया और यहूदी व्यवस्था की बड़ी कठोरता से पुष्टि की थी, जबकि सदुकियों ने रोमियों के साथ राजनैतिक तथा धार्मिक सहयोग देने के समर्थन में परम्पराओं को ठुकराया दिया था। सन्हेंद्रीन यहूदी न्यायालय प्रणाली थी और यूहदी नागरिक उसकी अधिनता में थे।

सामाजिक-आर्थिक:

इस्राएल के लोगों में धनी और निर्धन के बीच एक बड़ी खाई थी। अर्थिक सहायता के तीन मुख्य स्त्रोत थे-खेती बाड़ी, व्यापार और सरकारी भवन-निर्माण योजनाएं। रोमी सरकार ने कर (चुंगी) लेने के लिए स्थानीय लोगों को नियुक्त किया था और भारी कर वसूले जाते थे। कर या चुंगी लेनेवालों से स्थानीय लोग घृणा करते थे। यहूदी जानवर खरीद कर मन्दिर में बलिदान चढ़ाते थे। मन्दिर के आंगन प्राय: बिक्री का स्थान होते थे जहां व्यापारी जानवरों को बेचकर बड़ा लाभ कमाते थे। रोमी साम्राज्य में यूनानी और लेटिन सामान्य भाषाएं थीं परन्तु यहूदी सामान्यता इब्री या अरामी भाषा का उपयोग करते थे। यीशु अरामी बोलता था। इस्राएली एक संयुक्त परिवार प्रणाली में रहते थे जिसमें माता-पिता, अविवाहित बच्चे और विवाहित पुत्र तथा उसकी पत्नी सभी प्राय: एक ही छत के नीचे रहते थे। स्त्रियों को द्वीतीय श्रेणी के नागरिक का दर्जा दिया जाता था।

धार्मिक:

इस्राएल के धार्मिक जीवन में ''सब्त'' सब से महत्वपूर्ण था। इसका आरंभ शुक्रवार की प्रात: को होकर अन्त शनिवार की संध्या को होता था। सब्त का आरंभ

प्रार्थना से होता था और उसके बाद शुक्रवार का रात्रि-भोज होता था। शनिवार को विश्राम और आराधना का दिन माना जाता था और परमेश्वर को आदर देने के लिये समर्पित किया जाता था। भविष्यद्वक्ताओं के अनुसार, जिन्होंने परमेश्वर का वचन कहा था, यहूदी एक ''मसीह'' या उद्धारकर्ता की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे (प्रचलित समझ के अनुसार) उस मसीह की ओर देख रहे थे जो उनके लिए आत्मिक नवीनीकरण और रोमी साम्राज्य से स्वतंत्रता लाएगा। प्रथम शताब्दी के इस्राएलियों की संस्कृति आलौकिक शक्ति या घटनाओं में बहुत रुचि रखती थी– शापों में विश्वास करना और अंधविश्वास के नियंत्रण में रहना लोगों के लिये सामान्य बात थी।

फसह का पर्व यहूदी वर्ष के दौरान का मुख्य धार्मिक अवकाश हुआ करता था, जिसे यहूदी लोग मिस्र की गुलामी से छुटकारे की स्मृति में मनाते थे। फसह के पर्व के दौरान, अधिकांश यहूदी यरूशलेम जाते थे ताकि उसे पवित्र शहर में मनाये।

शैक्षणिक:

लिखित तोरह और मौखिक मिशना व्यवस्था दोनों ही शिक्षा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पहुंचाने के लिये उत्तरदायी थे। शिक्षण प्रक्रिया में धर्म, व्यवस्था, इतिहास, नैतिक मूल्य और शिक्षा सभी को एकत्रित किया जाता था। शिक्षक (जिन्हें रब्बी कहा जाता था) और शिक्षण स्थान (सिनगॉग या सभा का घर) यहूदियों के आत्मिक जीवन को बनाने में मुख्य कुंजी थे। ''तोरह'' अर्थात् ''व्यवस्था'' का अनुवाद, धार्मिक, ऐतिहासिक और नैतिक सभी प्रकार के शिक्षण का स्त्रोत था। तोरह में वर्तमान बाइबल की प्रथम पांच पुस्तकें आती हैं (उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण)।

पाठ 1 : यीशु का पूर्व अस्तित्व और वंशावली

परिचय:

इस भाग में आप यीशु के पूर्व अस्तित्व और वंशावली की झलक पाएंगे।

बाइबल संदर्भ

यूहन्ना 1:1-18, कुलुस्सियों 1:15-17, उत्पत्ति 1:1,26, मत्ती 1:1-17, लूका 3:23-28

वृत्तांत:

यीशु का पूर्व अस्तित्व

बाइबल में यीशु के पूर्व-अस्तित्व की गवाही पाई जाती है। यह इस पर प्रकाश डालती है कि संसार की रचना से पहले यीशु था और संसार की रचना उसी के द्वारा हुई। संसार में उसका आना परमेश्वर की ईश्वरीय योजना थी ताकि जितने उस पर विश्वास करें और उसके नाम को लें उन्हें वह परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दे। इस भाग में आप पढ़ेंगे कि बाइबल यीशु के इस संसार में आने से पहले के अस्तित्व पर प्रकाश डालती है।

उसकी वंशावली

इस भाग में आप यीशु की वंशावली को पढ़ेंगे। परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी, "मैं तेरे वंश को आकाश के तारागण के समान करूगा: और मैं तेरे वंश को ये सब देश दूंगा, और पृथ्वी की सारी जातियाँ तेरे वंश के कारण आशीष पायेंगी" (उत्प. 26:4)। यीशु का जन्म उस प्रतिज्ञा की पूर्ति है।

समूह चर्चा प्रश्न:

1. सृष्टि की रचना के समय यीशु कहां था?
2. संसार के उद्धार के लिये परमेश्वर की क्या योजना थी?
3. यीशु को संसार में क्यों भेजा गया था?
4. यीशु के बारे में यह आपको क्या बताता है?
5. यीशु से अब्राहम तक की वंशावली बताइये।

6. अब्राहम की वंशावली में यीशु का जन्म होना इसका हमारे विश्वास पर क्या महत्व है?

क्रियाकलाप:

1. एक चित्र बनाएं कि संसार की रचना किये जाने के समय में यीशु कैसे वहां था और सभी वस्तुएं कैसे उसके द्वारा बनीं।
2. लिखें कि यीशु सभी वस्तुओं से पहले था (उसका अस्तित्व था), यह जानने का आपके लिए क्या अर्थ है।
3. अपने पूरे परिवार के उन सदस्यों की सूची बनाइये जिन्हें अभी भी यीशु के बारे में सुनना है, और सुसमाचार सहित उन तक पहुंचने की योजना बनाइये।

पाठ 2: यीशु का जन्म

परिचय: इस विभाग में, आप इस बारे में पढ़ेंगे कि प्रभु ने जिब्राईल स्वर्गदूत को कैसे जकर्याह और मरियम के पास भेजा था। उन दोनों के पास वह बच्चे के जन्म के समाचार को लेकर गया था। उनमें से एक, दूसरे के लिए मार्ग तैयार करनेवाला था और दूसरे का नाम यीशु होना था, जिसके राज्य का कभी अन्त नहीं होगा। एक वृत्तांत उस के बारे में है जिसका नाम यूहन्ना होना था, कि प्रभु ने कैसे पुत्र के लिए की जानेवाली प्रार्थना का उत्तर दिया, और दूसरा वृत्तांत एक कुंवारी से उस बालक के जन्म के बारे में है जिसका नाम यीशु होना था, जो संसार का उद्धारकर्त्ता बनने वाला था।

बाइबल संदर्भ: लूका 1:1-80, मत्ती 1:18-25, लूका 2:1-38

वृत्तांत:

स्वर्गदूत मरियम के पास आता है

परमेश्वर ने जिब्राईल नामक स्वर्गदूत को गलील के नासरत नामक नगर की, मरियम नामक कुंवारी के पास भेजा, जिसका विवाह यूसुफ नामक एक पुरुष से होनेवाला था। स्वर्गदूत ने उससे कहा, ''हे मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।'' और मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, ''यह कैसे होगा। मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।'' और स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, ''पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और बच्चे का जन्म होगा क्योंकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।'' और स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।

स्वर्गदूत यूसुफ के पास आता है

मरियम मंगनी की यूसुफ से हो चुकी थी, उनके इकट्ठा होने से पहले ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। यह यूसुफ के लिए बड़े अपमान का विषय था। परन्तु एक धर्मी व्यक्ति होने कारण, और उसे बदनाम करना न चाहने के कारण, उसने उसे चुपके से त्याग देने का विचार किया। परन्तु जब यूसुफ इन बातों की सोच में ही था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, ''हे यूसुफ, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु

रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।'' नींद से उठने के पश्चात् यूसुफ ने वैसा ही किया जैसी प्रभु के दूत ने उसे आज्ञा दी थी। वह अपनी पत्नी को ले आया, परन्तु उसके पुत्र को जन्म देने तक वह उसके पास नहीं गया था। यीशु का जन्म होने पर उसने उसका नाम यीशु रखा।

यीशु का चरनी में जन्म हुआ

औगुस्तुस कैसर के दिनों में एक आज्ञा निकली कि सारे संसार के लोगों के नाम लिखे जाएं। यूसुफ और मरियम भी गलील के नासरत नगर से, यहूदिया में बैतलहम नाम नगर को गए क्योकि वे दाऊद के घराने के थे, ताकि मरियम के साथ नाम लिखवाएं। मरियम गर्भवती थी और उसके बच्चे को जन्म देने का समय आया। विश्राम का स्थान पाने के लिये उन्होंने एक-एक सराय के दरवाजों पर खटखटाया परन्तु उन्हें कोई स्थान न मिला। तब मरियम ने अपने पहलौठे पुत्र को जन्म दिया और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा।

चरवाहे और ज्योतिषी यीशु से मिलने आए और उसे अनेक उपहार देते हुये उन्होंने उसकी आराधना की।

समूह चर्चा प्रश्नः

1. स्वर्गदूत ने, मरियम को और बाद में यूसुफ को, परमेश्वर की योजना कैसे बताई?
2. स्वर्गदूत ने यूसुफ को यीशु के लिए परमेश्वर की योजना के बारे में क्या बताया था?
3. यूसुफ के चरित्र पर आपके क्या विचार हैं?
4. यीशु के जन्म के वृत्तांत का वर्णन करें।
5. यीशु ने इतने निम्न स्तर पर जन्म लेने का चुनाव क्यों किया?
6. मैदानों के चरवाहों को यीशु के जन्म के बारे में बताये जाने का क्या महत्व है?

क्रियाकलापः इस संसार में यीशु के जन्म की परमेश्वर की योजना से संबंधित चित्र या घटनाक्रम बनाएं।

पाठ 3: मिस्र को भाग जाना और यीशु का बचपन

परिचय: यह वृत्तांत यीशु के बचपन की रूपरेखा बनाती है। परमेश्वर की अपने पुत्र यीशु के लिए योजना थी; क्या राजा इसे रोक पाया?

बाइबल संदर्भ: मत्ती 2:1-23, लूका 2:39-52

वृत्तांत:

ज्योतिषी

पूर्व के कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे, ''यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आए हैं।'' राजा के जन्म का यह समाचार हेरोदेस को मिला और वह घबरा गया। हेरोदेस ने लोगों के सब प्रधान याजकों और शास्त्रियों को इकट्ठा करके उनसे पूछा कि मसीह का जन्म कहां होना चाहिए? उन्होंने उससे कहा, ''यहूदिया के बैतलहम में।''

हेरोदेस और ज्योतिषी

तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर उनसे पूछा कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था। उसने यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, ''जाओ उस बालक के विषय में ठीक-ठीक मालूम करो, और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो ताकि मैं भी आकर उसको प्रणाम करूं।'' ज्योतिषियों ने जो तारा देखा था उसके पीछे-पीछे वे तब तक चले जब तक कि वह उस जगह पर नहीं ठहर गया जहां बच्चे का जन्म हुआ था। उन्होंने उस घर में पहुंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और मुंह के बल गिरकर बालक को प्रणाम किया। इसके बाद अपना अपना थैला खोलकर उन्होंने उसको सोना, लोबान और गन्धरस की भेंट चढ़ाई।

स्वर्गदूत चेतावनी देता है

उनके लौटने के समय उन्हें स्वप्न में चेतावनी दी गई कि वे हेरोदेस के पास फिर न जाये और वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गए। प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा, ''उठ, उस बालक को और उसकी माता को लेकर मिस्र देश भाग जा, और जब तक मैं तुझ से न कहूं, तब तक वहीं रहना; क्योंकि

हेरोदेस इस बालक को ढूंढने पर है कि उसे मरवा डाले।'' स्वप्न के बाद यूसुफ रात को ही उठकर बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र को चल दिया और हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा।

समूह चर्चा प्रश्नः

1. यीशु को बचाने की परमेश्वर की ईश्वरीय योजना क्या थी?
2. यीशु के बचपन से हम क्या सीख सकते हैं?
3. यीशु यरूशलेम के मन्दिर में क्यों ठहर गया था?
4. यीशु को पवित्रशास्त्र का इतना अधिक ज्ञान कैसे मिला था?
5. महायाजकों ने बालक यीशु के बारे में क्या कहा?

क्रियाकलापः बालक यीशु के जन्म से लेकर उसके नासरत में रहने के लिए आने तक परमेश्वर की योजना और उसकी सुरक्षा में हस्तक्षेप करने के घटनाक्रम को लिखें।

पाठ 4: यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मार्ग तैयार करता है

परिचयः इस भाग में आप इस बारे में पढ़ेंगे कि परमेश्वर ने जकर्याह के पुत्र यूहन्ना को यीशु की सेवकाई के लिए मार्ग तैयार करने के लिये कैसे चुना

बाइबल संदर्भ लूका 3:1-4:4, यूहन्ना 1:19-34, यूहन्ना 1:35-2:25

वृत्तांतः

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला

जैसे ही यूहन्ना, यीशु का मौसेरा भाई, समझने के योग्य हुआ, उसके पिता ने उससे कहा, ''तेरे जन्म से पहले, परमेश्वर ने तेरे लिए उसकी एक विशेष तरह से सेवा करने की योजना बनाई है।'' यूहन्ना परमेश्वर की सेवा करने के लिए तैयार होने को बढ़ रहा था। और अपने माता-पिता की मृत्यु पश्चात् वह प्रार्थना व अध्ययन

करने को जंगल में जाता था। वहां परमेश्वर ने उसे उसका काम आरंभ करने को बुलाया। उस व्यक्ति का समाचार दूर-दूर तक फैलता गया जो किसी प्राचीन भविष्यद्वक्ता के समान दिखता व बोलता था। भीड़ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले नामक व्यक्ति की सुनने को यरूशलेम आती थीं। उनमें से कुछ तो उत्सुक थे, परन्तु यूहन्ना उनके विचारों को जानता था।

मार्ग तैयार करना

वह यरदन के आस-पास के सारे प्रदेश में जाकर, पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्में का प्रचार करने लगा। जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता के कहे वचनों की पुस्तक में लिखा है, ''जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि, प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी बनाओ। हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा; और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊँचा नीचा है वह चौरस मार्ग बनेगा और हर प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेगा।''

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. यूहन्ना की जीवन-शैली क्या थी?
2. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के जीवन से तीन प्रथम क्या थे?
3. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की क्या गवाही थी?

क्रियाकलापः यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का जीवन चरित्र लिखें।

अध्याय 5: यीशु का बपतिस्मा

परिचय: इस भाग में आप पढ़ेंगे कि यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के द्वारा कैसे बपतिस्मा पाया। उन घटनाओं के बारे में पढ़ें जो यीशु के बपतिस्में के समय में हुईं। यीशु बपतिस्मा लेने के आता है और यूहन्ना यीशु को को बपतिस्मा देता है। परमेश्वर का आत्मा कबूतर के समान उस पर उतरा।

बाइबल संदर्भ: मत्ती 3:13-17

वृत्तांत:

यीशु का बपतिस्मा

यीशु गलील से यरदन आया और वहां यूहन्ना उन लोगों को बपतिस्मा दे रहा था, जिन्होंने अपने पापों से मन फिराया था। यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए यीशु उसके पास गया। परन्तु यूहन्ना ने यीशु की ओर देखकर कहा, ''मुझे तो तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?'' परन्तु यीशु ने उसको उत्तर दिया, ''अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।'' इसके बाद वह यूहन्ना, यीशु को बपतिस्मा देने को तैयार हो गया। और यीशु के बपतिस्मा लेने पर, उसके लिये आकाश खुल गया और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा; और स्वर्ग से यह आवाज़ आई, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।''

समूह विचार-विमर्श:

1. यूहन्ना की उस समय क्या प्रतिक्रिया थी जब उसने यीशु को अपने पास बपतिस्मा लेने के आते देखा? क्यों?
2. यीशु के बपतिस्में के समय पिता परमेश्वर ने कैसे उसकी पुष्टि की?
3. कबूतर किसे प्रस्तुत करता है?
4. यीशु को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता क्यों थी?

क्रियाकलाप: बपतिस्में के बारे में आपके क्या विचार हैं?

अध्याय 6: यीशु की परीक्षाएं

परिचय: इस भाग में आप इस बारे में पढ़ेंगे कि यीशु कैसे आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा और 40 दिन तक उपवास किया। इस समय में शैतान ने यीशु की परीक्षा ली। आप जानेंगे कि यीशु ने परीक्षा पर कैसे विजय पाई और शैतान को परास्त किया।

बाइबल संदर्भ: लूका 4:1-13, मत्ती 4:1-11

वृत्तांत:

प्रार्थना के चालीस दिन

यीशु पवित्र आत्मा से भरा हुआ यरदान से लौटा और आत्मा के सिखाने से जंगल में रहा। वहां शैतान चालीस दिन तक उसकी परीक्षा करता रहा। उन दिनों में उसने कुछ नहीं खाया और इन दिनों के अन्त में उसे भूख लगी।

परीक्षा:

शैतान ने यीशु से कहा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इस पत्थर से कह, कि रोटी बन जाए।'' और यीशु ने उसे उत्तर दिया, ''लिखा है 'मनुष्य केवल रोटी से जीवित न रहेगा।' शैतान उसे ले गया और उसको पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए, और उससे कहा, ''मैं यह सब अधिकार, और इनका वैभव तुझे दूंगा, क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है: और जिसे चाहता हूं उसी को दे देता हूं। इसलिये यदि तू मुझे प्रणाम करे, तो यह सब तेरा हो जाएगा।'' यीशु ने उसे उत्तर दिया, ''लिखा है: 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर।'' तब शैतान ने यीशु को यरूशलेम में ले जाकर मंदिर के कंगूरे पर खड़ा किया, और उससे कहा, ''यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को यहां से नीचे गिरा दे, क्योंकि लिखा है, 'वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, कि वे तेरी रक्षा करें, और वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे'।'' यीशु ने उसको उत्तर दिया, ''यह भी कहा गया है, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा ने करना'।'' और जब शैतान सब परीक्षा कर चुका, तब कुछ समय के लिए वह उसके पास से चला गया।

समूह विचार विमर्श:

1. पहली परीक्षा क्या थी और यीशु ने शैतान को कैसे जवाब दिया?
2. दूसरी परीक्षा क्या थी और यीशु ने शैतान को कैसे हराया?
3. तीसरी परीक्षा क्या थी और यीशु ने शैतान को कैसे हराया?
4. हम परीक्षा को कैसे परास्त कर सकते हैं?
5. कौन सी परीक्षाएं हमारे लिए सामान्य हैं?

क्रियाकलाप: उस एक पाप को लिखें जिस पर आपका विजयी होना कठिन रहा है और इस पर विजय होने की आप क्या योजना बनाते हैं?

अध्याय 7: यीशु अपने शिष्यों का चयन करता है

परिचय: इस भाग में आप इस बारे में पढ़ेंगे कि यीशु ने अपनी सेवकाई के आरंभ में ही अपने शिष्यों का कैसे चयन किया। उसने उन्हें अपने साथ-साथ रखा और उन्होंने यीशु को देखा तथा उससे सीखा।

बाइबल संदर्भ : मरकुस 1:14-39

वृत्तांत:

सेवकाई का आरंभ

यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करते हुए अपनी सेवकाई का आरंभ किया, और उसने कहा, ''समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।''

वह अपने शिष्यों का चयन करता है

अपनी सेवकाई के आरंभ में ही यीशु अपने शिष्यों का चयन करने लगा, जिन्हें वह साढ़े तीन वर्ष तक प्रेम कर सिखाने वाला था। गलील की झील के किनारे जाते हुए, उसने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा: क्योंकि वे मछुवे थे। यीशु ने उनसे कहा, मेरे पीछे आओ; मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा।'' और वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए। कुछ आगे बढ़कर, उसने जब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई यूहन्ना को, नाव पर जालों को सुधारते देखा। उसने तुरन्त उन्हें बुलाया और वे अपने पिता जब्दी को मज़दूरों के साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे हो लिए।

बारह:

यीशु ने आगे बारह का चयन किया जिन्हें उसने प्रेरित कहा। वे यीशु के साथ रहे और चले और जो कुछ यीशु ने किया उसके गवाह थे। वे आनेवाले समय में कलीसिया के स्तम्भ बनाने वाले थे।

इन बाहर प्रेरितों के नाम ये हैं: यह पहला शमौन (जो पतरस कहलाता है) और उसका भाई अन्द्रियास, जब्दी का पुत्र याकूब, और उसका भाई यूहन्ना; फिलिप्पुस, और बरतुल्मै, थोमा, और महसूल लेनेवाला मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब, और तद्दै, शमौन कनानी, और यहूदा इस्का रियोती, जिसने बाद में यीशु से विश्वासघात किया।

समूह विचार-विमर्श:

1. परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते समय यीशु का क्या संदेश था?
2. यीशु ने अन्द्रियास और पतरस को कैसे अपने पीछे चलने को बुलाया?
3. शेष को यीशु ने कैसे बुलाया?
4. यीशु ने अपने शिष्यों को अपनी सेवकाई के उद्देश्य को कैसे दिखाया?
5. आपके जीवन में क्या आपका कोई परामर्शदाता है?
6. परामर्श कार्य से आप क्या समझते हैं?

क्रियाकलाप: अपने जीवन का मूल्यांकन करें और उन मुख्य लोगों के नाम लिखें जिन्होंने आपको और किस संबंध में परामर्श दिया।

अध्याय 8: पानी का दाखरस बनना

परिचय: यीशु उसकी माता मरियम और उसके शिष्य विवाह भोज में निमन्त्रित थे। भोज के दौरान मरियम को कुछ ऐसा पता चलता है जिससे दुल्हे को शर्मिन्दगी होगी। दाखरस समाप्त हो चुका था। वह यीशु से कहती है, इसके पश्चात् वह सेवकों के पास जाती है। वह सेवकों से वही करने को कहती है जो कुछ यीशु उनसे करने को कहे। यीशु उनसे मटकों को पानी से भरने को कहता है। सेवकों को यीशु में एक अजीब अधिकार की अनुभूति होती है और वे उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। जब सेवक मटकों के पानी को अतिथियों को देने के लिए जाते हैं, एक चमत्कार होता है: पानी दाखरस बन जाता है। भोज का प्रधान दाखरस को चखने पर आश्चर्यचकित होता है। यह यीशु का पहला चमत्कार था।

बाइबल संदर्भ: यूहन्ना 1:4, 7-51, यूहन्ना 2:1-11, 23-25, यूहन्ना 3:1-2

वृत्तांत:

विवाह में यीशु

यीशु, उसकी माता, और उसके शिष्य गलील के काना में किसी विवाह में निमन्त्रित थे। विवाह में, दाखरस घट गया, और यीशु की माता ने उससे कहा कि दाखरस नहीं रहा। यीशु ने उससे कहा, ''हे महिला, मुझे तुझ से क्या क्या? अभी समय नहीं आया।'' यीशु की माता ने सेवकों से कहा, ''जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।''

खाली मटके

वहां यूहदियों के शुद्ध करने की रीति के अनुसार पत्थर के छ: मटके धरे थे, जिनमें दो-दो तीन-तीन मन समाता था। यीशु ने सेवकों से कहा, ''मटकों में पानी भर दो।'' और उन्होंने उन्हें मुँहा मुंह भर दिया। तब यीशु ने उनसे दाखरस को निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाने को कहा।

चमत्कार

जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा, जो दाखरस बन गया था और नहीं जानता था कि वह कहाँ से आया है (परन्तु जिन सेवकों में पानी निकाला था वे जानते थे), तो भोज के प्रधान ने दुल्हे को बुलाकर उससे कहा, ''हर एक मनुष्य

पहले अच्छा दाखरस देता है, और जब लोग पीकर छक जाते हैं, तब मध्यम देता है; परन्तु तू ने अच्छा दाखरस अब तक रख छोड़ा है।'' यीशु ने गलील के काना में यह किया। यह उसके कई चमत्कारों में पहला था, जिसके द्वारा उसने अपनी महिमा को दिखाया।

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. मरियम ने यीशु को स्थिति से क्यों परिचित कराया?
2. सेवकों ने किस कारण यीशु की आज्ञा मानी?
3. इस चमत्कार का शिष्यों पर क्या प्रभाव पड़ा होगा?
4. आज चमत्कार होने के बारे में आपकी क्या धारणा है?

क्रियाकलापः अपने जीवन में यीशु के चमत्कारी कार्य को लेकर आपका क्या अनुभव रहा है? अपने अनुभव को लिखें।

अध्याय 9: नीकुदेमुस यीशु से मिलता है

परिचय: इस भाग में, नीकुदेमुस यीशु से रात को मिलता है। यीशु उसके हृदय के गहन प्रश्न का उत्तर देता है, कोई व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में कैसे प्रवेश कर सकता है?'' इस बारे में यहां और जानें कि कोई व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में कैसे प्रवेश कर सकता है।

बाइबल संदर्भ: यूहन्ना 3:1-21

वृत्तांत:

रात में

फरीसियों में नीकुदेमुस नाम का एक मनुष्य था, जो यहूदियों का शासक था। नीकुदेमुस रात के समय यीशु के पास आया, संभवत: इसलिए कि वह नहीं चाहता था कि कोई और उसे देखे। यीशु ने नीकुदेमुस से कहा, ''मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।'' नीकुदेमुस इससे आश्चर्यचकित होकर यीशु से बोला, ''मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?'' यीशु ने उत्तर दिया, ''मैं तुझ से सच सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।''

उद्धार

यीशु हृदय के परिवर्तन, आत्मा से जन्म लेने, और एक गवाह का जीवन जीने के बारे में बोल रहा था। हृदय और जीवन दोनों में रूपान्तरण होने वाले ही परमेश्वर के राज्य का देख पाएंगे।

समूह विचार-विमर्श प्रश्न:

1. कोई व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में कैसे प्रवेश कर सकता है?
2. किसी के परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के बारे में आपकी क्या धारणा है?
3. अपने उद्धार के अनुभव को बताएं।

क्रियाकलाप:

1. अपने दो मित्रों से नया जन्म पाने के अनुभव के बारे में पूछें।
2. अपने किन्हीं दो मित्रों के साथ अपने विश्वास को बांटें।
3. पांच मित्रों के नाम लिखें।

अध्याय 10: चार मित्र और उनका विश्वास

परिचय: यीशु जहां भी जाता था भीड़ उसके पीछे-पीछे जाती थी। एक दिन कफरनहूम में वह जिस घर में शिक्षा दे रहा था लोगों की इतनी भीड़ थी कि कोई और भीतर नहीं आ सकता था। कुछ व्यक्ति जो अपने बीमार मित्र को यीशु को दिखाने के लिए लाए थे वे भीड़ के कारण भीतर नहीं जा पाए, इसलिए वे उस बीमार मित्र को छत पर ले गए। उन्होंने छत में एक छेद कर दिया और उसे छत से नीचे उतार दिया। इस असाधारण विश्वास और प्रेम की कहानी को पढ़ें।

बाइबल संदर्भ: मरकुस 2:1-12

वृत्तांत:

भरा हुआ कमरा

यीशु सिखा रहा था और बहुत से उसकी सुनने को इकट्ठा थे। वहां इतने लोग इक्ट्ठा थे कि द्वार के पास भी जगह नहीं थी। वहां चार मित्र थे जो एक लकवे के रोगी को यीशु से चंगाई दिलाने को लाए थे। परन्तु भीड़ के कारण उसके निकट न पहुंच सके।

विश्वास

वे विश्वास से इतने पूर्ण और अपने मित्र की चंगाई को लेकर इतना हताश थे कि उन्होंने उस छत को जिसके नीचे यीशु था, खोल दिया, और जब वे उसे खोल चुके, उन्होंने उस खाट को जिस पर लकवे का रोगी पड़ा था, लटका दिया। यीशु ने उनका विश्वास देखकर उस लकवे के रोगी से कहा, ''हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।'' कुछ शास्त्री जो वहां बैठे थे, अपने अपने मन में विचार करने लगे, ''यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है? परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है?''

क्षमा करने की सामर्थ

यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया कि वे अपने अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उनसे कहा, ''तुम अपने अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो? सहज क्या है? क्या लकवे के रोगी से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना कि उठ अपनी खाट उठाकर चल फिर?'' यीशु ने लकवे के रोगी की ओर देखकर कहा, ''मैं तुझ से कहता हूं उठ, अपनी खाट उठकार अपने घर चला जा।'' वह उठा और तुरन्त खाट उठाकर सबके सामने से निकलकर चला गया,

इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे,''हम ने ऐसा कभी नहीं देखा।''

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. मित्रों ने छत में किस कारण छेद किया?
2. यीशु को चारों मित्रों में क्या अद्‌भुत लगा?
3. उसे चंगा करने से पहले यीशु पाप क्षमा के बारे में क्यों बोला?
4. यह यीशु और उसकी सामर्थ के बारे में क्या बताता है?

क्रियाकलापः इब्रानियों 11 को देखने पर, यीशु में अपने विश्वास में आप कैसे चलते हैं? अपने अनुभव को लिखें।

अध्याय 11 पहाड़ी उपदेश

परिचय: यीशु भला करता, बीमारों को चंगाई देता, दुष्टात्माओं को निकालता और परमेश्वर के राज्य की घोषणा करता रहा। अपने पीछे आई लोगों की एक बड़ी भीड़ को देखकर वह पहाड़ पर चढ़ गया और बैठ गया। और उसके शिष्य उसके पास आए और यीशु उन्हें उपदेश देने लगा।

बाइबल संदर्भ : मत्ती 5:1-16

उपदेश:

धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं: क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

धन्य हैं वे जो शोक करते हैं: क्योंकि वे शांति पाएंगे।

धन्य हैं वे जो नम्र हैं: क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होगे।

धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं: क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।

धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं: क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध है: क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

धन्य हैं वे जो मेल करानेवाले हैं: क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं: क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और तुम्हें सताएं, और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। तब आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है।

समूह विचार-विमर्श प्रश्न:

1. यीशु किन्हें धन्य कहता है और क्यों?
2. मसीही और नमक के उदाहरण को स्पष्ट करें।
3. मसीही और जगत की ज्योति के उदाहरण को स्पष्ट करें।

क्रियाकलाप: यीशु की शिक्षाओं से एक गीत को लिखें या चित्र बनाएं, जो उसके सही सारांश को देता हो जिसे यीशु सिखाने का प्रयास कर रहा था।

अध्याय 12: संगमरमर का पात्र वाली स्त्री

परिचय: यह कहानी यीशु के एक पापी स्त्री को क्षमा करने के बारे में है। यह प्रेम के असाधारण नमूने की कहानी है जो क्षमा से दिखता है। स्वयं से प्रश्न करें, परमेश्वर को सबसे अधिक किससे प्रेम है?

बाइबल संदर्भ: लूका 7:36-50

वृत्तांत:

फरीसी के घर पर

शमौन नामक एक फरीसी ने यीशु को अपने घर आने का निमंत्रण दिया और यीशु उसके घर गया। जब एक पापिनी स्त्री को पता चला कि यीशु फरीसी के घर पर आया है, वह इत्र की बोतल लेकर आई और रोती हुई यीशु के पास बैठ गई। अपने आंसुओं से उसने यीशु के पावों को धोया और अपने बालों से उसने उन्हें पोंछकर सुखाया। वह उसके पावों को चूमते हुए उन पर इत्र लगाती रही।

यह देखकर फरीसी अपने मन में सोचने लगा, ''यदि यीशु भविष्यद्वक्ता होता, तो जान जाता कि यह स्त्री जो उसे छू रही है, पापिनी है।'' तब यीशु ने शमौन फरीसी को बुलाया और उसे एक दृष्टांत सुनाया।

दृष्टांत

''किसी महाजन के दो देनदार थे। एक 500 और दूसरा पचास दीनार का देनदार था। जब वे लौटा नहीं पाए, तो महाजन ने उदारतापूर्वक उन दोनों का ऋण क्षमा कर दिया।

कौन अधिक प्रेम करता है?

यीशु ने शमौन से पूछा, ''इसलिये अब उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम करेगा?'' शमौन ने उत्तर दिया, ''मेरी समझ में वह, जिसका अधिक ऋण क्षमा किया गया।'' यीशु ने उससे कहा, ''तू ने सही जवाब दिया है।''

तब यीशु ने फरीसी से कहा, ''मैं तेरे घर में आया परन्तु तू ने मेरे पांव धोने के लिए पानी न दिया। पर इस स्त्री ने मेरे पांव आंसुओं से धोए और अपने बालों से पोंछे। तू ने मुझे चूमा न दिया, परन्तु इसने मेरे पांवों को चूमना न छोड़ा। तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला, परन्तु इसने मेरे पांवों पर इत्र मला है। इसके पाप जो

बहुत थे क्षमा हुए, और इसी कारण इसने इतना अधिक प्रेम दिखाया है। परन्तु जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है वह थोड़ा प्रेम करता है।''

यीशु ने स्त्री की ओर फिरकर कहा,'' तेरे पाप क्षमा हो गए हैं, शांति से जा।''

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. पाप में पड़ी स्त्री द्वारा किया कार्य फरीसी को क्यों स्वीकार्य नहीं था?
2. यीशु ने फरीसी और स्त्री के प्रेम की क्या तुलना की?
3. क्या यह सही है कि फरीसी का कम और स्त्री का अधिक क्षमा किया गया था? क्यों?

क्रियाकलापः

एक मित्र के साथ इस प्रश्न के उत्तर को लिखें या बांटेः अंतिम बार कब यीशु के प्रति मेरा प्रेम सक्रिय रूप से दिखा था? क्या यह परमेश्वर द्वारा दी गई क्षमा से भरपूर है?

अध्याय 13: यीशु तूफान को डांटता है

परिचय: बारह शिष्यों के यीशु के साथ चलने और उसके प्रत्येक कार्य को देखने पर उसने उन्हें सिखाया। यीशु ने अपने शिष्यों से विश्वास में बढ़ने और परीक्षा के समयों में अपने विश्वास पर अभ्यास करने की आशा की थी।

बाइबल संदर्भ: मत्ती 8:18-27, मरकुस 4:35, लूका 8:22-25

वृत्तांत:

तूफान

एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे चलती थी और उसने उनमें से प्रत्येक को चंगा किया। ऐसे ही किसी एक दिन यीशु ने अपने शिष्यों को नाव पर बैठकर दूसरी ओर जाने को कहा। नाव के झील में चलते समय एक बड़ा तूफान और लहरें नाव से टकराने लगे। तूफान इतना भयानक था कि नाव पलट सकती थी। शिष्य भयभीत थे, परन्तु यीशु सो रहा था।

भय

भयभीत शिष्यों ने यीशु के पास आकर उसे जगाते हुए कहा, ''हे प्रभु, हमें बचा, हम नष्ट हुए जाते हैं।'' यीशु ने उठकर उनसे पूछा, ''हे अल्प विश्वासियों, क्यों डरते हो?''

यीशु डांटता है

यीशु ने उठकर तूफान को शांत कर दिया और उसने उसकी आज्ञा मानी। आंधी और चेहरें रुक गई और सब शांत हो गया। शिष्य अचम्भा करके एक दूसरे से कहने लगे,' ''यह यीशु कौन है, कि आंधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?''

समूह विचार-विमर्श प्रश्न:

1. यीशु के साथ यात्रा करते हुए शिष्यों को किस समस्या का सामना करना पड़ा?
2. क्या भयभीत होकर शिष्यों ने सही काम किया था? उस स्थिति में सही प्रतिक्रिया क्या है?
3. यीशु शिष्यों से क्यों कहता है, हे अल्प-विश्वासियों?''

क्रियाकलाप:

1. अपने समूह को अपने जीवन की उस एक घटना के बारे में बताएं जब आप सच में डर गए थे और आपकी क्या प्रतिक्रिया थी?
2. इस प्रश्न पर विचार-विमश्र करें, ''जीवन में संकट की स्थिति उत्पन्न होने पर आपकी सही प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए?

अध्याय 14: यीशु पानी पर चलता है

परिचय: यह यीशु के पानी पर चलने की आश्चर्यचकित कर देनेवाली कहानी है। यीशु अपने शिष्यों को विश्वास रखने के बारे में सिखाता है।

बाइबल संदर्भ: मत्ती 14:22-36, मरकुस 6:45-56, यूहन्ना 6:15-21

वृत्तांत: *यीशु प्रार्थना करने जाता है*

पांच हज़ार लोगों को चमत्कारिक रूप से भोजन खिलाने के पश्चात् यीशु अपने शिष्यों को नाव से बैतसैदा जाने को कहता है जो कि झील के दूसरी ओर था। यीशु वहीं रुक जाता है, भीड़ को विदा कर वह बाद में पहाड़ पर प्रार्थना करने को चला जाता है। जिस समय शिष्य झील से होकर जा रहे थे, हबा और लहरों के कारण उन्हें बड़ी कठिनाई हुई और झील को पार करने में खतरा भी अनुभव हुआ।

यीशु पानी पर चलता है

यह जानकर यीशु उनके पास पानी पर चलते हुए आया। वह उन तक पहुंचना चाहता था, परन्तु उसे देखकर, शिष्य डर गए और उसे एक आत्मा (भूत) समझा। भय के कारण वे चिल्लाने लगे। यीशु ने उनसे कहा, ''डरो मत; मैं हूं।'' उसके नाव में उनके साथ बैठते ही हवा कम गई।

समूह विचार-विमर्श प्रश्न:

1. यीशु उनके पास पानी पर चलकर क्यों गया? क्या इसमें शिष्यों के लिए कोई शिक्षा है?
2. क्या आप दूसरा उदाहरण दे सकते हैं जिसमें प्रकृति ने यीशु की आज्ञा मानी थी?
3. भजन संहिता की पुस्तक को पढ़ें और परमेश्वर तथा प्रकृति के बीच के संबंध को सूचीगत करें।

क्रियाकलाप:

1. कहानी पर नाटक रूप में अभिनय करें, जिसमें सभी अधिकांश विद्यार्थी भूमिका कर रहे हों।
2. नाटक के पश्चात् पूरे समूह से ये प्रश्न करें:

- यीशु को पानी पर चलते देख शिष्यों की क्या प्रतिक्रिया थी?
- शिष्यों तक पानी पर चलते हुए पहुंचने का यीशु का क्या उद्देश्य था?

अध्याय 15: झील के निकट का पागल व्यक्ति

परिचय: शिक्षा देने के दिन के अन्त में यीशु अपने शिष्यों से उसे गलील की झील के दूसरी ओर ले जाने को कहता है। वह सोने के लिए लेट जाता है परन्तु तभी अचानक एक बड़ी आंधी आती है। भय के कारण शिष्य नाव के पिछली ओर भागते हैं। वे यीशु को उठाते हैं और वह उठकर तूफानी झील का सामना करता है। उसी क्षण आंधी और लहरें थम जाती है। प्रात: नाव के किनारे पर पहुंचने पर यीशु और उसके शिष्य झील के किनारे उतरते हैं, एक दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति यीशु से आकर मिलता है। यीशु अशुद्ध आत्मा को उस व्यक्ति में से बाहर आने की आज्ञा देता है। उसी क्षण व्यक्ति ठीक हो जाता है। यह देखकर लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं और अचम्भा करते हैं कि यीशु में ऐसी कौन सी सामर्थ है कि दुष्टात्माएं भी उसकी आज्ञा मानती हैं। वह व्यक्ति यीशु के साथ जाना चाहता है, परन्तु यीशु उससे घर लौटकर अपने मित्रों को वह बताने को कहता है जो परमेश्वर ने उसके लिए किया है।

बाइबल संदर्भ: मरकुस 4:7-41, मरकुस 5:1-24, 35-43

वृत्तांत:

झील

संध्या का समय था, यीशु ने अपने शिष्यों के साथ गलील के दूसरी ओर पार जाने की योजना बनाई। पार जाने के लिए उन्होंने एक नाव ली। यीशु नाव के पिछली ओर जाकर सो गया। अचानक एक बड़ी आंधी आई और लहरें नाव पर टकराने लगीं। यह इतना शक्तिशाली था कि ऐसा लगा कि वे डूबने वाले हैं।

यीशु डांटता है

शिष्य बहुत डर गए थे। वे यीशु को ढूंढ़ने लगे और उन्होंने उसे नाव के पिछली ओर सोता पाया। उन्होंने उसे जगाकर उससे कहा, ''हे गुरु, क्या तुझे चिंता नहीं कि हम नष्ट हुए जाते हैं?'' यीशु ने उठकर आंधी और लहरों से कहा, ''शांत रह, थम जा।'' तब आंधी थम गई और बड़ा चैन हो गया।

तुम्हारा विश्वास कहाँ है?

अपने शिष्यों की ओर फिरकर यीशु ने उनसे पूछा, ''तुम इतने डरपोक क्यों हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?'' परन्तु शिष्य बहुत ही अचम्भे में थे और वे

आपस में कहने लगे, यह कौन है? आंधी और पानी भी इसकी आज्ञा मानते हैं?''

समूह विचार विमर्श प्रश्नः

1. शिष्य किससे इतना डर गए थे?
2. जिस समय आधी आई यीशु कहां था?
3. आंधी ने यीशु की आज्ञा क्यों मानी?
4. इस घटना से शिष्यों ने क्या सीखा?
5. जिस व्यक्ति में दुष्टात्मा थी उसके बारे में आप क्या सोचते हैं?
6. दुष्टात्मा ने यीशु की आज्ञा क्यो मानी?
7. इस घटना से शिष्यों ने क्या सीखा?

क्रियाकलापः

क्या आप कभी ऐसी स्थिति से होकर गए या दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति के बारे में कभी सुना? वह कैसे चंगा हुआ? दुष्टात्माओं पर परमेश्वर की सामर्थ के बारे में आपका क्या दृष्टिकोण है? कुछ शब्दों में अपने विचारों को लिखें और अपने शिक्षक के साथ उन्हें बांटें।

अध्याय 16: भले सामरी का दृष्टांत

परिचय: एक दिन जिस समय यीशु प्रचार कर रहा था, एक व्यवस्थापक (वकील) ने उसकी परीक्षा करने का निर्णय लिया। उसने एक प्रश्न पूछा जिसके लिए फरीसियों के कई जटिल नियम थे। उसका प्रश्न है, ''अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?'' यीशु एक प्रश्न करते हुए उत्तर देता है जो व्यवस्थापक को फरीसियों के नियमों का अनादर करने और परमेश्वर की आज्ञाओं की ओर सीधे जाने का दबाव डालता है। वह पूछता है, ''व्यवस्था में परमेश्वर का वचन क्या कहता है?'' व्यवस्थापक ऊत्तर देता है, ''अपने परमेश्वर को अपने पूरे हृदय से और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर।'' यीशु उत्तर देता है, ''तूने ठीक कहा, यही कर तो तुझे अनन्त जीवन मिलेगा।'' व्यवस्थापक पूछता है, ''मेरा पड़ोसी कौन है?'' यीशु एक कहानी के साथ उत्तर देता है। यीशु भले सामरी की कहानी सुनाता है, इस प्रयास में कि ''पड़ोसी'' के विषय को स्पष्ट कर सके। सबसे पहले बाइबल की इस खूबसूरत कहानी को कई बार पढ़ें और स्वयं से पूछें, ''मेरा पड़ोसी कौन है?''

बाइबल संदर्भ: लूका 10:25-39

वृत्तांत:

''भले सामरी का दृष्टांत''

एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था और डाकुओं ने मार्ग में उस पर हमला किया। उसके कपड़े उतारकर उसे सड़क पर मरने के लिए छोड़ दिया। और ऐसा हुआ कि एक याजक वहां से गुज़रा और उसने उसे देखा और आगे बढ़ गया। ऐसे ही एक लेवी वहां आया, वह भी उसे देखकर दूसरी ओर चला गया। परन्तु एक सामरी वहां से गुज़रा, उसने सड़क पर पड़े इस अधमरे व्यक्ति को देखा, और उस पर तरस खाया। उसने तेल और दाखरस से उसके घावों को धोया औ उन पर पट्टी बांधी। इसके बाद वह उसे अपने गधे पर चढाकर स्वास्थ्य केन्द्र पर ले गया। उसने सेवा-टहल करनेवाले को कुछ धन देकर उससे उसकी अच्छी देखभाल करने को कहा, और उससे इससे अधिक होनेवाले खर्च को भरने की प्रतिज्ञा की।

मेरा पड़ोसी कौन है?

उन्हें दृष्टांत सुनाने के पश्चात् यीशु ने उनसे पूछा, ''जो डाकुओं से घिर गया था, उसको पड़ोसी कौन था?'' इस प्रश्न के उत्तर में व्यवस्थापक ने कहा, ''वही जिसने उस पर दया की।'' तब यीशु ने उससे जाकर वैसा ही करने को कहा।

समूह विचार-विमर्श

1. यीशु किस व्यवस्था का उल्लेख कर रहा है?
2. प्रथम दो व्यक्तियों ने घायल व्यक्ति को क्यों अनदेखा किया?
3. इस कहानी में सामरी कौन सा सांस्कृतिक कार्य करता है?
4. मार्ग पर पड़े घायल व्यक्ति के लिए सामरी क्या करता है?
5. यह कहानी हमें हमारे पड़ोसी के बारे में क्या सिखाती है?

क्रियाकलाप:

1. निम्नलिखित में से किसी एक को करें:
   - अ. नाटक प्रारूप में, भले सामरी की कहानी को अपने शब्दों में लिखें।
   - ब. भले सामरी की कहानी का बोर्ड बनाएं।
   - स. भले सामरी की कहानी का समुचित चित्र बनाएं।
   - द. भले सामरी की कहानी पर एक गीत लिखें।
2. भले सामरी की कहानी पर एक नाट्य अभिनय करें।

अध्याय 17: रूपान्तरण

परिचय: इस कहानी में आप इस बारे में पढ़ेंगे कि यीशु कैसे अपने शिष्यों के साथ पहाड़ पर गया? और उनके सामने उसका रूप बदल गया; उसका मुख सूर्य के सामन चमक रहा था, और उसके वस्त्र ज्योति के समान श्वेत हो गए थे। और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिया। पतरस ने यीशु से कहा,-हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है। यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहां तीन मण्डप बनाऊँ; एक तेरे लिए, एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये।'' वह बोल ही रहा था कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं; इसकी सुनो।'' पहाड़ से उतरते हुए यीशु ने अपने शिष्यों से उस बारे में किसी को न बताने के लिए कहा जो उन्होंने देखा था।

बाइबल संदर्भ: मत्ती 17:1-13

वृत्तांत:

रूपान्तरण

अपने अधिकांश शिष्यों को छोड़ यीशु पतरस में, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को लेकर किसी ऊँचे पहाड़ पर गया। पहाड़ पर तीनों शिष्यों के सामने यीशु का रूपान्तर (उसका रूप बदलना) हुआ। उसका मुँह सूर्य के समान चमका और उसका वस्त्र ज्योति के समान उजला हो गया। उनके बीच में मूसा और एलिय्याह यीशु से बात करते दिखाई दिये। यह देखकर पतरस ने यीशु से पूछा, हमारा यहां रहना अच्छा है; यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये।'' पतरस बोल ही रहा था कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं: इसकी सुनो।'' शिष्य यह सुनकर अत्यंत डर गए और मुंह के बल गिर गए। परन्तु यीशु सहायता के लिए उनके पास आया, उसने उन्हें छूकर कहा, ''डरो मत।'' तभी मूसा और एलिय्याह गायब हो गए और उन्होंने यीशु को छोड़ और किसी को न देखा।

किसी को न बताना

वे पहाड़ से उतरते हुए तब यीशु ने शिष्यों से कहा, जब तक वह मरे हुओं में से न जी उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना। शिष्यों ने यीशु से पूछा,'' वे क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?'' यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, ''एलिय्याह आ चुका है, परन्तु उन्होंने उसे नहीं पहचाना, परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया।'' तब शिष्यों ने समझा कि उसने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में कहा है।

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. यीशु अपने तीन शिष्यों को ही क्यों लेकर गया?
2. पहाड़ पर क्या हुआ?
3. बादल से क्या शब्द निकला?
4. तीनों शिष्यों के जीवनों पर इस पहाड़ पर जाने की घटना का क्या प्रभाव पड़ता है?

क्रियाकलापः तीनों शिष्यों के साथ वहां आपके होने के प्रभाव पर अपने समकक्षों के साथ विचार-विमर्श करें।

अध्याय 18: पांच हज़ार को भोजन खिलाना

परिचय: यह यीशु के पांच हज़ार लोगों को भोजन खिलाने की अद्‌भुत कहानी है। यीशु लोगों से बोल रहा था और देर हो चुकी थी। यीशु को तरस आया और उसने अपने शिष्यों को लोगों को भोजन खिलाने की चुनौती दी। इस चमत्कारी विवरण को पढ़ें और इस चमत्कार के माध्यम से यीशु के मन को पढ़ें।

बाइबल संदर्भ: मत्ती 14:13-21, मरकुस 6:30-44, लूका 9:10-17, यूहन्ना 6:1-14

वृत्तांत:

चरवाहा रहित भीड़

यीशु गलील की झील अर्थात् तिबिरियास की झील के दूसरी ओर अपने शिष्यों को लेकर विश्राम करने को गया। परन्तु बड़ी संख्या में लोग यीशु और उसके शिष्यों से मिलने को उसके पीछे हो लिये। यीशु ने एक बड़ी भीड़ देखी और उन पर तरस खाया, क्योंकि वह उन भेड़ों के समान थी जिनका काई चरवाहा न हो।

लोगों को भोजन खिलाना

यीशु ने उन्हें बहुत बातों के बारे में शिक्षा दी। संध्या होने पर शिष्यों ने यीशु से भीड़ को विदा करने के लिए कहा कि वे भोजन कर सकें। परन्तु यीशु ने फिलिप्पु से कहा कि वे इन लोगों के लिए भोजन का प्रबन्ध करें, जिस पर शिष्यों ने उत्तर दिया कि उनके लिए इतने अधिक लोगों को भोजन कराना असंभव था।

पांच रोटी और दो मछलियाँ

अन्द्रियास नामक शिष्य एक लड़के को यीशु के पास लेकर आया जिसके पास पांच रोटी और दो मछलियां थीं। यीशु ने लोगों को पचास और सौ की गिनती में बैठने को कहा। यीशु ने रोटी और मछली ली और परमेश्वर को धन्यवाद दिया और जो लोग बैठे थे उनमें इसे बांटने को कहा। रोटी और मछली की मात्रा बढ़ गई। सब लोग अपनी आवश्यकतानुसार खाकर तृप्त हुए। तब यीशु ने बचे टुकड़ों को इकट्ठा करने को कहा ताकि कुछ भी बेकार न जाए। शिष्यों ने रोटी और मछली के टुकड़ों से भरी बाहर टोकरियों उठाईं। और जिन लोगों ने भोजन खाया वे संख्या में पांच हज़ार थे।

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. यीशु अपने शिष्यों को विश्राम के लिए एक शांत स्थान पर लेकर क्यों गया?
2. मसीही कार्यकर्ताओं के जीवनों में विश्राम और सब्त की क्या भूमिका है?
3. यीशु को लोगों पर तरस आया। लोगों में किसकी घटी थी?
4. यदि हमारी यीशु के समान तरस खाने वाले आँख हों, आज के संसार में हमारी क्या प्रतिक्रिया होगी?
5. इस चमत्कार का आप के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है?

क्रियाकलापः नीचे दिये सभी 3 को, एक विशिष्ट समूह को लक्ष्य बनाते हुए व्यक्तिगत रूप से या लोगों के समूह में किया जा सकता है?

1. अपने मोहल्ले/समुदाय/कार्यस्थल कीं ''चरवाहे रहित भेड़ों'' की सूची बनाएं।
2. आपके विचार से आप ''चरवाहे रहित भेड़ों'' की देखभाल कैसे कर सकते हैं?
3. अपने आस-पास की आवश्यकताओं की प्रतिक्रिया में एक कार्य योजना बनाएं। यह देखन को अपनी योजना की समक्षा करें कि यह ''समार्ट'' है या नहीं। पाठ्यक्रम के अगले छह माह में अपने शिक्षक के साथ इस पर समीक्षा करने की योजना बनाएं।

अध्याय 19 लाज़र को पुनः जीवन मिला

परिचयः यीशु को मरियम, मार्या और लाज़र से प्रेम था। लाज़र बहुत बीमार था और बहनों ने यीशु के पास संदेश भेजा। परन्तु यीशु ने कहा कि यह बीमारी मृत्यु के लिए नहीं, परमेश्वर की महिमा के लिये है। उसने लाज़र से मिलने में देरी की। यह परमेश्वर की सामर्थ के प्रगटीकरण और इसकी एक अद्‌भुत कहानी है कि लाज़र को कैसे पुनः जीवन मिला।

बाइबल संदर्भः यूहन्ना 11

वृत्तांतः

यीशु देरी करता है

यीशु को मरियम और मार्था से पता चलता है कि उनका भाई लाज़र बीमार है। यीशु को उनसे अत्यधिक प्रेम था। परन्तु यह जानने पर यीशु ने कहा, ''यह बीमारी मृत्यु की नहीं परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।'' वह जिस स्थान पर था वहीं ठहर गया और उनसे मिलने नहीं गया। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि लाज़र सो रहा है और वह उसे उठाने जाएगा।

यीशु के बैतनिय्याह पहुंचने पर, लाज़र की मृत्यु हो चुकी थी और उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके थे। मरियम और मार्था के संबंधी उनसे मिलने और उन्हें सांत्वना देने आए। जब मार्था ने सुना कि यीशु गांव में आ चुका है, वह उससे मिलने को दौड़ी और अभी वह आ ही रहा था कि उससे मिली और उसके पांवों पर गिर पड़ी।

यीशु ने उससे कहा, ''तेरा भाई फिर जी उठेगा। पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा। जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह कभी नहीं मरेगा।''

तब मार्था ने मरियम को बताया कि यीशु उससे मिलना चाहता है। वह यीशु से जाकर मिली। जब यीशु ने उसको और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे, रोते देखा तो आत्मा में बहुत ही उदास और व्याकुल हुआ। यीशु ने उनसे पूछा, ''तुम ने उसे कहाँ रखा है?'' उन्होंने उससे कहा कि चलकर देख ले। यीशु रो पड़ा।

यीशु लाज़र को जीवित करता है

कब्र पर पहुंचने पर यीशु बहुत उदास था। यह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर रखा था। यीशु ने कब्र पर रखे पत्थर को हटाने के लिए कहा। परन्तु मार्था ने यीशु से कहा कि उसमें से अब तो दुर्गन्ध आती होगी। यीशु ने उससे कहा, ''क्या मैंने तुझसे नहीं कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।'' अत: उन्होंने पत्थर को हटाया। यीशु ने अपने पिता से प्रार्थना की और ऊँची आवाज़ में पुकारा, ''हे लाज़र निकल आ!'' लाज़र जो मर गया था, वह जीवित हो गया। यीशु ने कहा कि उसे खोल दो और जाने दो।

समूह विचार-विमर्श प्रश्न:

1. यीशु ने लाज़र से मिलने जाने में देरी क्यों की?
2. यीशु ने लाज़र के संबंध में मरियम और मार्था से क्या कहा?
3. यीशु के रोने का क्या अर्थ है?
4. लाज़र ने फिर से जीवन कैसे पाया?
5 आपके जीवन का सबसे कठिन भाग कौन सा रहा है जिसे यीशु ने रूपान्तरित किया है?

क्रियाकलाप: अपने जीवन की किसी ऐसी घटना के बारे में बताएं जिसमें परमेश्वर की महिमा के लिए कुछ बुरा हुआ था।

अध्याय 20: धनवान युवा शासक

परिचय: एक धनवान युवा शासक ने यीशु के पास आकर उससे पूछा, ''गुरु, अनन्त जीवन पाने के लिये मैं क्या करूं?'' यीशु ने उत्तर दिया, ''तू आज्ञाओं को तो जानता है।'' जब युवक ने पूछा कि किसका पालन करना है, यीशु ने कहा, ''तू व्यभिचार न करना, तू हत्या न करना, तू चोरी न करना, तू झूठी गवाही न देना, अपने माता-पिता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना।'' युवक ने उत्तर दिया, ''मैं इन सबको मानता हूं। मुझमें किस बात की घटी है?''

वह उदास होकर चला जाता है

यीशु ने उससे कहा, तुझ में अब भी एक बात की घटी है, अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को बांट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो तो।'' जब युवक ने यीशु से उसकी संपत्ति को बेचने के बारे में सुना, तो वह उदास हो गया। वह यीशु के पास से चला गया।

समूह विचार-विमर्श प्रश्न:

1. धनवान युवा शासक ने यीशु से क्या पूछा?
2. अपने जबाव में यीशु ने किन दस आज्ञाओं के बारे में बात की?
3. किन दस आज्ञाओं को यीशु ने छोड़ दिया था? आपके विचार से धनवान लोगों पर इसका क्या महत्व है?
4. युवक उदास होकर क्यों लौट गया? उसके मन में क्या चल रहा होगा?
5. धनवान के बारे में बताने को यीशु किस समानता का उपयोग करता है, और वे परमेश्वर के राज्य में कैसे प्रवेश करेंगे?
6. मसीही होने के कारण हमारा धन के प्रति क्या रवैया होना चाहिए?

क्रियाकलाप:

1. पृथ्वी की उन सभी वस्तुओं की सूची बनाएं जो आपको सबसे प्रिय हैं। सूची के पूरा होने के पश्चात् स्वयं से पूछें कि यदि इन्हें आप से ले लिया जाए तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?
2. धन और इसकी हानि पर केन्द्रित होते हुए एक अय्यूब के जीवन से, अध्ययन बनाएं।

अध्याय 21: यरीहो के निकट ज़क्कई परिवर्तित होता है

परिचय: जक्कई एक धनी चुंगी लेनेवाला था जो यीशु को देखना चाहता था। यीशु ने उससे प्रेम किया और उससे मिलने गया। इस भेंट के दौरान ज़क्कई का हृदय और जीवन बदल गया। यह पापियों के लिये यीशु के प्रेम और खोए हुओं को बचाने के लिए उसके उत्साह की एक असाधारण कहानी है।

बाइबल संदर्भ: लूका 19:1-10

वृत्तांत:

चुंगी लेनेवाला ज़क्कई

ज़क्कई नामक एक धनी चुंगी लेनेवाला था। वह एक बदनाम पापी और कद में छोटा था। उसने सुना कि यीशु यरीहो से होकर जा रहा था। वह उसे देखना चाहता था। कद में छोटा होने के कारण चूंकि वह भीड़ में यीशु को नहीं देख सकता था, वह दौड़कर यीशु को देखने की आशा से एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया। जब यीशु उस पेड़ के पास पहुंचा, उसने ऊपर देखकर कहा, ''हे ज़क्कई, झट उतर आ; क्योंकि मुझे आज तेरे घर में रहना अवश्य है।''

यीशु उससे मिलने जाता है

ज़क्कई तुरन्त नीचे उतर उसे आनन्द से अपने घर ले गया। परन्तु जो लोग यह सब देख रहे थे उन्हें यह अच्छा नहीं लगा। वे शिकायत करने लगे, ''यीशु एक पापी के यहां अतिथि बनकर जा रहा है।'' यीशु ने ज़क्कई के साथ भोजन खाया और उसके साथ सहभागिता की।

ज़क्कई परिवर्तित हो गया

यीशु के ज़क्कई के घर आने पर ज़क्कई का हृदय बदल गया और वह खड़ा होकर कहने लगा, ''हे प्रभु, मैं अपनी आधी संपत्ति कंगालों को दूंगा। मैंने यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना लौटा दूंगा।'' तब यीशु ने उससे कहा, ''आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है, क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार करने आया है।''

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. ज़क्कई का सामाजिक स्तर और स्वीकृति कैसी रही होगी?
2. यीशु ने ज़क्कई की आवश्यकता को क्या प्रतिक्रिया दी?
3. ज़क्कई जैसे पापी के घर जाने पर यीशु पर किस तरह का दबाव रहा होगा?
4. ज़क्कई में क्या परिवर्तन हुआ?
5. हृदय और जीवन बदलने का क्या अर्थ है?

क्रियाकलापः

1. हृदय के बदल जाने पर आप जीवन के किस रूपान्तरण या परिवर्तन से होकर गए हैं?
2. आपके जीवन के किन क्षेत्रों में अभी भी बदलाव की आवश्यकता है? एक कार्य योजना बनाएं।

अध्याय 22: अन्धा बरतिमाई

परिचय: जितने भी यीशु के पास आए उसने सभी को चूगा किया। यदि आप यीशु से अपने लिए कुछ किये जाने की आशा करते हैं तो इसके लिए आपको विश्वास की आवश्यकता होगी। यह एक असाधारण विश्वास वाले व्यक्ति की कहानी है।

बाइबल संदर्भ: मत्ती 20:29-34, मरकुस 10:46-50, लूका 18:35-43

वृत्तांत:

बरतिमाई सहायता के लिए बुलाता है

यीशु और उसके शिष्य यरीहो से निकल रहे थे और एक बड़ी भीड़ उनके पीछे चल रही थी। बरतिमाई नाम का एक अन्धा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था। जब उसने सुना कि नासरत का यीशु वहां से जा रहा है, वह पुकारकर कहने लगा, ''यीशु, दाऊद की संतान, मुझ पर दया कर।'' परन्तु उसके आस-पास के लोगों ने उसे चुप रहने को कहा। बरतिमाई इससे निराश नहीं हुआ; वह और भी चिल्लाकर कहने लगा, ''दाऊद की संतान मुझ पर दया कर।''

यीशु उसे चंगा करता है

यीशु रुककर उस व्यक्ति को अपने पास लाने को कहता है। अत: उन्होंने उस अंधे को बुलाकर उससे कहा, ''ढाढ़स बांध! उठ! वह तुझे बुलाता है?'' बरतिमाई अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास गया। यीशु ने उससे पूछा, ''तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करू?'' अंधे व्यक्ति ने उससे कहा, ''स्वामी, यह कि मैं फिर देखने लंगू।'' यीशु ने उससे कहा, ''चला जा। तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।'' उसी समय वह व्यक्ति फिर से देखने लगा, और यीशु के पीछे हो लिया।

समूह विचार-विमर्श प्रश्न:

1. बरतिमाई यीशु को क्यों बुलाता रहा? यह उसके विश्वास के बारे में आपको क्या बताता है?
2. उसके आस-पास के लोगों ने उससे चुप रहने को क्यों कहा?
3. बरतिमाई की चंगाई में उसके विश्वास का क्या महत्व था?

क्रियाकलाप:

1. विधार्थियों के समूह की एक ऐसी घटना के बारे में बताएं जब आपने किसी बात के लिए विश्वास कर उसे मांगा और पाया।
2. विद्यार्थियों के समूह की एक ऐसी घटना के बारे में बताएं जब आपने किसी बात के लिए विश्वास कर उसे मांगा और नहीं पाया।
3. आप विश्वास में कैसे बढ़ सकते हैं? समूह विचार-विमर्श करें।

अध्याय 23: विजयी प्रवेश

परिचय: सप्ताह का पहला दिन है। यरूशलेम की सड़क उन लोगों से भरी है जो यहूदियों के फसह के पर्व को मना रहे हैं। यीशु की विनती पर उसके शिष्य उसके लिए एक निम्न सवारी लेकर आए। वह उस पर बैठकर भीड़ के साथ जुड़ जाता है। उत्सुकतापूर्वक वे उसके लिए मार्ग बनाते, खजूर की डालियों को लहराते और उसके मार्ग पर अपने वस्त्रों को बिछाते हैं। जिस समय वे मार्ग और नगर में उसका बिजयी मार्गदर्शन कर रहे होते हैं, उनकी यह प्रशंसा की आवाज़ चारों ओर फैल जाती है। होशाना, धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है?''

बाइबल संदर्भ: मत्ती 21:1-17, मरकुस 11:1-11, लूका 19:29-44

वृत्तांत:

यीशु अपने शिष्यों को गदही का बच्चा लाने का निर्देश देता है

यीशु ने अपने दो शिष्यों को गदही का बच्चा ढूंढने को भेजा। उसने उनसे कहा कि गांव में जाओ और तुम्हें एक गदही का बच्चा बंधा हुआ मिलेगा, उसे खोलकर मेरे पास लाओ। यदि कोई पूछे या पशु के लिए इन्कार करे, तो उससे कहना कि स्वामी को इसकी आवश्यकता है। और यह वैसा ही था भविष्यद्वक्ता ने कहा था: ''सिय्योन की बेटी से कहो, 'देख तेरा राजा तेरे पास आता है; वह नम्र है का देह पर बैठा है, वरन् लादू के बच्चे पर।'' शिष्यों ने जाकर वैसा ही किया जैसा यीशु ने उनसे कहा था और उसके लिए गदही के बच्चे को लेकर आए।

यीशु गदही के बच्चे पर बैठता है।

उन्होंने पशु पर अपने वस्त्र डाले और यीशु उस पर बैठ गया। यीशु गदही के बच्चे पर बैठकर यरूशलेम में गया और लोग मार्ग में दोनों ओर खड़े थे। उन्होंने मार्ग में अपने वस्त्र डाल दिये, अन्यों ने डालियां काटकर उन्हें मार्ग में फैला दिया और वे जो उसके पीछे चल रहे थे ऊँची आवाज़ में यह कहने लगे, ''दाउद के पुत्र को होशाना: धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है; आकाश में होशाना।'' यीशु के यरूशलेम जाने पर नगर में हलचल मच गई और वे पूछने लगे, ''यह कौन है?'' और जो लोग उसके पीछे आ रहे थे उन्होंने कहा, ''यह गलील के नासरत का भविष्यद्वक्ता यीशु है।''

यीशु यरूशलेम के लिये रोता है

जैसे ही यीशु यरूशलेम के निकट पहुंचा, वह नगर को देखकर उस पर रोया, और कहने लगा, ''भला होता कि आज तू यह जान पाता कि तुझे कैसे शांति मिलेगी। परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिप गई हैं। वे दिन तुझ पर आएंगे कि तेरे बैरी मोर्चा बांधकर तुझे घेर लेंगे, और चारों ओर से तुझे दबाएंगे और तुझ में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे।'' यीशु प्रतिदिन मन्दिर में उपदेश देता था। प्रधान याजक और शास्त्री उसे नष्ट करने का अवसर ढूंढते थे: परन्तु वे कोई उपाय न निकाल सके; क्योंकि सब लोग बड़े चाव से उसकी सुनते थे।

समूह विचार विमर्श प्रश्न:

1. यीशु ने यरूशलेम में कैसे प्रवेश किया?
2. यीशु ने यरूशलेम में इस तरह से प्रवेश करने का चुनाव क्यों किया?
3. फरीसियों ने यरूशलेम में यीशु के प्रवेश पर क्या प्रतिक्रिया दी?
4. यीशु के जीवन में इस घटना का क्या महत्व है?

क्रियाकलाप: इस विषय पर एक अध्ययन करें, ''विजयी प्रवेश के संदर्भ में, परमेश्वर के राज्य के विचारों के बीच संघर्षरत् शिष्यों के मनों की चुनौती।'' अपने विचारों को लिखें।

अध्याय 24: अटारी

परिचय: विश्वासघाती, यहूदा इस्करियोती के चले जाने के बाद, यीशु रोटी को लेता है, और उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता है, उसे तोड़ता, और अपने शिष्यों को यह कहते हुए देता है, ''यह मेरी देह है।'' उनके रोटी खाने के पश्चात्, वह उन्हें कटोरा देता है। यीशु परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक नई वाचा को बनाता है। लोगों ने यीशु के नाम में रोटी और दाखरस को लेने पर उन्हें स्मरण करना है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा उन्हें पाप की गुलामी से छुड़ाया। यह खूबसूरत कहानी रोटी को तोड़ने और हमारे विश्वास तथा उद्धार पर इसके महत्व पर विचार करने के बारे में बताती है।

बाइबल संदर्भ: लूका 22:17-20, यूहन्ना 13:33-38, मत्ती 26:30, 36-56

वृत्तांत:

फसह के लिए तैयारी

यह अखमीरी रोटी का दिन था, जिसमें फसह का बलिदान किया जाता था, और यीशु ने पतरस तथा यूहन्ना को जाकर फसह का भोजन तैयार करने को कहा, जिसे उन सभी को खाना था। उन्होंने यीशु से पूछा कि उन्हें इसे कहां तैयार करना है। यीशु ने उन्हें बताया कि नगर में प्रवेश करते ही एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा। वह जिस घर में जाएगा उन्हें उसके पीछे जाना है और उस घर के स्वामी से कहना है कि क्या उसके घर में पाहुनशाला है, जहां यीशु अपने शिष्यों के साथ फसह खा सके। उन्हें एक सजी-सजाई बड़ी अटारी दिखाई जाएगी और उन्हें कमरे को तैयार करना है। पतरस और यूहन्ना ने वैसा ही पाया जैसा यीशु ने उनसे कहा था और उन्होंने फसह का भोजन तैयार किया।

फसह

संध्या में, यीशु अपने शिष्यों के साथ बैठा और उसने उनके साथ फसह को मनाया। उसने उनसे कहा, ''मुझे बड़ी लालासा थी कि दु:ख भोगने से पहले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊं: क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा।'' यीशु ने कटोरा लिया, और धन्यवाद देने के बाद उसने कहा, ''इस को लो और आपस में बांट लो।'' इसके

बाद यीशु ने रोटी ली, और धन्यवाद देने के बाद उसने इसे तोड़ा, और उन्हें देते हुए कहा, ''यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दी जाती है; मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।'' इसी रीति से उसने भोजन के बाद कटोरा भी यह कहते हुए लिया, ''यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है।''

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. रोटी को तोड़ते और दाखरस को देते समय यीशु ने क्या किया?
2. यीशु ने रोटी और दाखरस के बारे में क्या कहा?
3. हम आज भी प्रभु भोज में क्यों भाग लेते हैं?
4. इसका आपके जीवन में क्या महत्व है?

क्रियाकलापः निर्गमन 12 के अनुसार ''फसह की रीति'' का अध्ययन करें। इसका अध्ययन करें। परमेश्वर की मानवजाति को छुटकारा देने की योजना के प्रकाश में अपने अध्ययन से किये विचारो को लिखें।

अध्याय 25: यीशु की गिरफ्तारी और जांच

परिचय: जिस समय यीशु गतसमनी नामक बगीचे में प्रार्थना कर रहा था, यहूदा लोगों के एक दल के साथ बागीचे में आया। अपने समझौते के अनुसार वह यीशु की चूमने द्वारा पहचान करता है। एक अधिकारी को आदेश देने पर सिपाही यीशु को बांधकर यरूशलेम, उस नगर, में ले जाते है जिसमें कुछ दिन पहले ही वह विजयी सवारी के साथ निकला था। यीशु को गिरफ्तार किये जाने के बाद, महायाजक के महल में लाया जाता है। झूठे गवाह ने निडरतापूर्वक उस पर कई बातों का दोष लगाते हैं, परन्तु कुछ प्रमाणित नहीं कर पाते। अन्त में महायाजक कैदी से प्रश्न करता है। उसी क्षण, सुरक्षाकर्मी यीशु की ओर फिरकर, उस पर थूकते हैं, उसके मुह को ढांककर उससे यह बताने के द्वारा अपनी सामर्थ को प्रमाणित करने को कहते हैं कि बता तुझे किसने मारा।

बाइबल संदर्भः मत्ती 26:57-75, यूहन्ना 18:28-38 लूका 26:6-12

वृत्तांतः

यीशु को गतसमनी के बगीचे में गिरफ्तार किया जाता है

यीशु अपने शिष्यों के साथ गतसमनी के बगीचे में प्रार्थना कर रहा था। यहूदा, बारह में से एक, आया, और उसके साथ प्रधान याजकों और लोगों के पुरनियों की ओर से बड़ी भीड़, तलवारें और लाठियां लिये हुए आई। यहूदा ने यह संकेत दिया था कि जिसका मैं चूमा लूं वही है, उसे पकड़ लेना। यहूदा ने यीशु के पास जाकर उसे चूमा और उन्होंने आकर उसे पकड़ लिया।

यीशु की जांच

प्रधान याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में झूठी गवाही की खोज में थे। बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी वे उसके विरुद्ध कोई दोष न पा सके। महायाजक ने यीशु पर ईशनिन्दा का दोष लगाया और यह घोषित किया कि यीशु मारे जाने के योग्य है।

पिलातुस के सामने यीशु

पिलातुस ने यीशु के विरुद्ध लगाए आरोपों को सुना और उससे पूछा कि क्या वह स्वयं को यहूदियों का राजा समझता है। यीशु ने उतर दिया, ''हां।'' पर्व के

समय में गवर्नर (हाकिम को लोगों के लिए किसी एक कैदी को छोड़ना होता था, और पिलातुस ने उनसे पूछा कि वह यीशु को छोड़े या बरअब्बा को। भीड़ ने बरअब्बा को छोड़ने और यीशु को क्रूस पर चढ़ाने को कहा। पिलातुस ने यह जानते हुए कि यीशु निर्दोष है, यीशु के लहू से अपने हाथों को धोकर उसे क्रूस पर चढ़ाने को दे दिया।

उन्होंने उसके सिर पर कांटों का एक मुकुट रखा और उसके दाहिने हाथ में सरकण्डा दिया; और उसके आगे घुटने टेककर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगे और कहा, ''हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!''

पतरस यीशु का तीन बार इनकार करता है।

पतरस को गिरफ्तार किये जाने के बाद जब न्यायालय लाया गया तो पतरस उसके पीछे पीछे चल रहा था। न्यायालय में, तीन लोगों ने उसे पहचाना और कहा कि उन्होंने उसे यीशु के साथ देखा था। पतरस ने यीशु को जानने से दृढ़तापूर्वक इंकार करते हुए कहा, ''मैं नहीं जानता कि तुम किसकी बात कर रहे हो।'' बाद में उसने कहा, ''मैं उसे नहीं जानता।'' और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी, जैसे यीशु ने कहा था, ''मुर्ग के बांग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।'' और पतरस जाकर फूट-फूटकर रोया।

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. यीशु अपने शिष्यों को साथ गतसमनी के बगीचे में क्या कर रहा था?
2. यहूदा ने यीशु के साथ कैसे विश्वासघात किया?
3. बगीचे में जब यीशु को धोखा दिया गया था तब शिष्यों ने क्या किया?
4. यीशु की जांच कैसे हुई?
5. जो दोष यीशु पर लगाए गए उसने उन्हें कैसे प्रतिक्रिया दी?

क्रियाकलापः आपके जीवन में प्रार्थना की क्या स्थिति है? आप दिन में कितनी बार प्रार्थना करते, बाइबल पढ़ते और यीशु के साथ समय बिताते हैं? क्या आप किसी ऐसे प्रार्थना निवेदन को आप कर सकते हैं जिसके लिए अपने प्रार्थना की और जिसका आपको उत्तर मिला याद आपको परमेश्वर से एक उत्तर मिला?

अध्याय 26: क्रूस

परिचय: यहूदी अगुवों ने यीशु पर रोम के विरुद्ध देशद्रोह का आरोप लगाया। पिलातुस यीशु के दोषी होने पर विश्वास नहीं करता, परन्तु उसे यहूदियों के क्रोध का डर है। भीड़ चिल्लाती है, उसे क्रूस पर चढ़ा, उसे क्रूस पर चढ़ा। अचानक उसे एक उपाय सूझता आता है। वह लोगों पर इस निर्णय को छोड़ देता है कि यीशु को मरना चाहिए या नहीं। अपने स्थान को खतरे में न डालते हुए, वह यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए सौंप देता है। ऐसा करने के साथ साथ वह यीशु की क्रूस पर लगाए जाने को दोष-पत्र लिखकर देता है। नौ बजे के लगभग, यीशु के साथ दो डाकुओं की कलवरी पर क्रूस पर चढ़ाया जाता है, जहां परमेश्वर के पुत्र को कीलों से ठोंका जाता है। उसके सिर के ऊपर एक दोष-पत्र लगा है, ''यीशु नासरी, यहूदियों का राजा।''

बाइबल संदर्भ : यूहन्ना 18:39-19:16, मत्ती 27:3-10, लूका 23:26-46, यूहन्ना 19:25-27

वृत्तांत:

गुलगुता

सिपाहियों ने यीशु पर थूका, उसका ठट्ठा किया, उसके वस्त्र पर चिट्ठी डाली और उसे क्रूस पर चढ़ाने को ले गए। मार्ग में उन्हें शमौन नामक एक कुरैनी पुरुष मिला, जिसे उन्होंने क्रूस उठाने में सहायता करने का आदेश दिया। गुलगुता पहुंचने पर, उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया।

डाकू

दोनों ओर दो डाकुओं को क्रूस पर चढ़ाया गया, एक को दाईं ओर और दूसरे को बाईं ओर। उनमें से एक डाकू ने यीशु से कहा, ''क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आप को और हमें बचा।'' परन्तु दूसरे ने उसे डांटकर कहा, ''क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता, तू भी तो वही दण्ड पा रहा है? और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं; पर इसने कोई अनुचित काम नहीं किया।'' यीशु ने उससे कहा, ''आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।''

क्रूस पर यीशु के अंतिम सात वचनों को नीचे उनके पारम्परिक क्रम में सूचीगत किया गया है;

1. हे पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।'' (लूका 23:34)।
2. ''मैं तुझसे सच सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलो में होगा'' (लूका 23:43)।
3. ''हे नारी, देख यह तेरा पुत्र है'' (यूहन्ना 19:26-27)।
4. ''हे मेरे, परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया।'' (मत्ती 27:46 और मरकुस 15:34)?
5. ''मैं प्यासा हूं (यूहन्ना 19:28)।
6. ''पूरा हुआ'' (यूहन्ना 19:30)।
7. ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं'' (लूका 23:46)

मन्दिर के पर्दे का फटना

पृथ्वी पर छः से नौ घण्टों तक अंधेरा छाया रहा। सूर्य अंधकारमय हो गया और मंदिर का पर्दा फटकर दो टुकड़े हो गया। पर्दा पवित्रस्थान को ढांकता था, जो कि परम पवित्र था और मन्दिर का याजक इसमें प्रवेश कर सकता था। परन्तु पर्दे के दो टुकड़ों में फट जाने पर, यह परमेश्वर का संकेत तथा कि उसने पवित्र स्थान में नहीं परन्तु मनुष्यों के हृदय में रहने का चुनाव किया है।

उसकी मृत्यु

यीशु पुकार उठा, ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौपता हूं।'' और क्रूस पर उसकी मृत्यु हो गई। यह देखकर सूबेदार ने परमेश्वर को महिमा देते हुए कहा, सचमुच यह एक धर्मी व्यक्ति था।''

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. महायाजक और भीड़ ने पिलातुस से यीशु को कैसे क्रूस पर चढ़ाने को कहा?
2. कलवरी तक यीशु की यात्रा कैसी थी?
3. यीशु के अंतिम घंटे किस तरह के थे?
4. यीशु ने हमारे लिए स्वयं पर क्या दुःख लिया?
5. पर्दे के फटने का आज हमारे विश्वास से क्या अर्थ है?

क्रियाकलापः क्रूस पर कहे यीशु के सात वचनों का और आज इसका हमारे लिये जो संदेश है उसका अध्ययन करें।

अध्याय 27: उसका गाड़ा जाना

परिचय: दोपहर का समय है; धीरे धीरे देश पर एक अजीब सा अंधेरा छा जाता है। तीन घंटे तक अंधकार रहता है, इसके पश्चात् यीशु परमेश्वर से पुकार उठता है, ''पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं की और ऐसा करने के बाद, उसकी मृत्यु हो जाती है। यरूशलेम में अरिमतिया का यूसुफ यीशु का एक गुप्त अनुयायी पिलातुस के पास जाकर उससे सब्त से पहले यीशु की देह को गाड़े जाने के लिए कहता है। यूसुफ यीशु की देह को क्रूस पर से उतारकर उसे मलमल के कपड़े से लपेटकर यूसुफ के बगीचे की कब्र में रखता है। कब्र पर मुहर लगाकर रोमी सिपाहियों को उसकी सुरक्षा के लिए रखा जाता है।

बाइबल संदर्भ: मरकुस 15:38-39, लूका 23:48-49, यूहन्ना 19:38-42, मत्ती 27:62-66

वृत्तांत:

गाड़ा जाना

अरिमतिया के युसुफ ने पिलातुस से देह को लेकर गाड़े जाने के लिए कहा और पिलातुस ने उसे अनुमति दे दी। यूसुफ और नीकुदेमुस ने यीशु की देह को उतारा उसे मलकल के कपड़े में गन्धरस और एलवा के साथ लपेटकर, एक कब्र में रखा जिसमें कभी कोई नहीं रखा गया था।

कब्र पर मुहर लगाना

महायाजक और फरीसियों को कब्र पर रखे गए पत्थर पर मुहर लगाने, उस स्थान की तहरेदारी करने के लिए सुरक्षाकर्मियों को रखने की अनुमति दी गई थी, यह सुनिश्चित करने के लिए कि यीशु की देह को चुराया न जा सके। यीशु ने कहा था कि वह मृतकों में से जी उठेगा और उन्हें डर था कि उसके शिष्य रात में आकर उसे चुरा लेंगे और लोगों से कहेंगे कि वह मृतकों में से जी उठा है।

समूह विचार-विमर्श प्रश्न:

1. यीशु को किसने गाड़ा?
2. यूसुफ के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. यीशु की देह की कैसे रक्षा की गई थी?

क्रियाकलाप: जो लोग यीशु के प्रिय थे उनके क्या विचार और भावनाएं रही होंगी?

अध्याय 28: प्रभु जी उठा है

परिचय: तीसरे दिन की प्रात: पृथ्वी कांपने लगती है। प्रभु का एक दूत उतरकर भारी पत्थर को एक ओर लुढ़का देता है। भयभीत सिपाही भूमि पर गिर जाते हैं। खड़े होने की स्थिति में आते ही वे तेज़ी से नगर की ओर दौड़ पड़ते हैं। उसी प्रात:, मरियम मगदलीनी और यीशु के अन्य मित्र उसकी देह पर मसाले लगाने को शीघ्रता से वहां आए। मार्ग में, उन्हें इसकी चिन्ता थी कि वे पत्थर को कैसे हटा पाएंगे। परन्तु बगीचे में पहुंचने पर, कब्र खुली मिलती है।

बाइबल संदर्भ : मरकुस 16:1-8, यूहन्ना 20:1-18, मत्ती 28:11-15, लूका 24:13-32

वृत्तांत:

पुन:रुत्थान की सुबह

रविवार की सुबह थी और सब्त पूरा हो चुका था। मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम, और सलोमी जाकर यीशु की देह पर लगाने को मसाले लाईं। मार्ग में चलते हुए वे एक दूसरे से विचार विमर्श कर रही थीं कि वे बड़े पत्थर को कैसे हटाएंगी। यह एक बहुत विशाल पत्थर था। कब्र पर पहुंचने पर उन्होंने पत्थर पहले से लुढ़का पाया। कब्र में भीतर जाने पर उन्होंने एक जवान व्यक्ति को श्वेत वस्त्र पहने देखा, वे बहुत आश्चर्य में थीं। परन्तु उसने उनसे कहा कि डरो मत, जिस यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था वह मृतकों में से जी उठा है। उसने उनसे जाकर शिष्यों को बताने के लिए कहा कि यीशु अपने कहे अनुसार, उनसे गलील में मिलनेवाला है। वे कब्र से निकलकर, आश्चर्यचकित होकर दौड़ गईं। उन्होंने भयभीत होने के कारण किसी से कुछ न कहा।

मरियम मगदलीनी सबसे पहले यीशु को देखती है

मरियम मगदलीनी, जिसमें से सात दुष्टात्माओं को निकाला गया था, कब्र के बाहर बैठकर रोती रही। कब्र पर बैठे दो स्वर्गदूतों ने उससे पूछा कि वे मेरे प्रभु को उठा ले गए हैं। वह रोए जा रही थी, वह यीशु को वहां खड़े देखती है, और उसी गलती से माली समझ लेती है। यीशु ने उससे पूछा, ''हे नारी, तू क्यों रोती है? किसको ढूंढती है?'' उसने उसे माली समझकर उत्तर दिया, ''हे महाराज, यदि तू

ने उसे उठा लिया है तो मुझे बता कि उसे कहाँ रखा है, और मैं उसे ले जाऊंगी।'' यीशु ने उससे कहा, 'मरियम।'' यीशु की ओर मुड़कर उसने कहा,'' हे गुरु।'' जो हुआ था वह सब मरियम ने जाकर शिष्यों को बताया, परन्तु उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया।

पतरस और यूहन्ना

पतरस और यूहन्ना स्वयं देखने के लिए कब्र की ओर दौड़े। यूहन्ना पतरस से आगे निकल वहां पहुंचा। उन्होंने पत्थर को लुढ़का पाया, और जिन वस्त्रों से देह को लपेटा गया था, वे वहीं पड़े थे। यूहन्ना ने कब्र में जाकर देह को न पाकर यह विश्वास किया कि यीशु मृतकों में से जी उठा है।

पहरेदार झूठ फैलाते हैं

पहरेदारों ने शक्तिशाली भूकम्प को देखा था और वे स्वर्ग के एक स्वर्गदूत द्वारा पत्थर के लुढ़काए जाने के गवाह थे। स्वर्गदूत पत्थर पर बैठा था और वह दिखने में ज्योति के समान उज्ज्वल था। कुछ पहरेदारों ने मिटकर महायाजक को उस सबके बारे में बताया जो हुआ था। महायाजक ने पुरनियों के साथ मिलकर पहरेदारों को बड़ा धन देकर झूठ फैलाने की योजना बनाई। उन्हें यह कहने की आज्ञा दी गई कि यीशु के शिष्य रात में आकर उसे चुराकर ले गए। पहरेदारों ने धन लेकर इस झूठ को फैला दिया, जो आज भी यहूदियों में प्रचलित है।

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. मरियम के कब्र पर पहुंचने पर क्या हुआ?
2. यीशु की खोज के लिए जाने पर पतरस का क्या अनुभव था?
3. सिपाहियों ने इस सत्य को कैसे छिपाने का प्रयास किया कि यीशु मृतकों में से जी उठा है?

क्रियाकलापः अपने मित्र को बताएं कि यीशु के मृतकों में से जी उठने का आपके जीवन पर क्या प्रभाव है।

अध्याय 29: पुनरुत्थान के बाद चालीस दिन

परिचय: यीशु इम्माऊस के मार्ग पर जानेवाले अपने दो अनुयायियों के साथ हो लेता है। वे उससे बात तो करते हैं परन्तु उसे पहचान नहीं पाते। उस संध्या को इम्माऊस में भोजन करने पर यीशु जब रोटी पर आशीष देकर उन्हें देता है, तभी वे उसे पहचान लेते हैं। यीशु के शिष्यों को गिरफ्तार होने का डर था, इस कारण उन्होंने अपने को अटारी में बन्द कर रखा था। अचानक यीशु कमरे में आ जाता है, परन्तु शिष्यों को लगता है कि वे भूत देख रहे है। एक संध्या को शिष्य मछली पकड़ने जाते हैं। रात भर मछली पकड़ने पर वे कुछ नहीं पकड़ पाते हैं। दिन निकलने पर वे किनारे पर एक व्यक्ति की आकृति को देखते हैं। वह उनसे नाव की दाईं ओर जाल डालने को कहता है। वे आज्ञा का पालन करते हैं और अचानक जाल इतनी मछलियों से भर जाता है कि वे उसे खींच भी नहीं पाते। शिष्य जान जाते हैं कि यह यीशु है। यीशु पतरस को एक बड़ा कार्य देता है, ''मेरी भेड़ों की देखभाल कर।''

बाइबल संदर्भ: लूका 24:33-43, यूहन्ना 20:9-21:6

वृत्तांत:

इम्माऊस के मार्ग पर यीशु के दो अनुयायी यीशु के साथ जो हुआ था उस बारे में बातचीत कर रहे थे। यीशु की मृत्यु के समय वे यीशु के साथ थे और उन्होंने सुना था कि यीशु की देह कब्र में नहीं है। उन्होंने स्त्रियों से यह भी सुना था कि स्वर्गदूतों ने उन्हें बताया था कि यीशु मृतकों में से जी उठा है।

मार्ग में उन पर प्रगट होकर यीशु ने उनसे पूछा कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं। वे सच में उदास दिख रहे थे। उन्होंने उसे बताया कि वे उस यीशु के बारे में बात कर रहे थे जिसे महायाजक और अगुवों ने क्रूस पर चढ़ा दिया था। परन्तु अन्तिम तीन दिनों की सभी घटनाओं को बताने पर भी वे यीशु को पहचाने नहीं पाए; उनकी आंखों को उसकी पहचान करने से बंद किया गया था।

यीशु ने उन्हें बताया कि मसीहा को कैसे क्रूस पर चढ़ाया जाना था, परन्तु तीसरे दिन उसे मृतकों में से जी उठना था। बाद में उस संध्या जब यीशु ने रोटी तोड़ी तब उनकी आंखें खुल गईं और वे जान गए कि वह कौन है। उसी समय वह उनके सामने से छिप गया। तब उन्होंने आपस में कहा, ''जब वह मार्ग में हम से बातें

करता था और पवित्रशास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना उत्पन्न न हुई।'' और जो कुछ हुआ था उसे उन्होंने यरूशलेम जाकर शिष्यों को बताया।

यीशु का शिष्यों को दिखाई देना

जब शिष्य बातें कर रहे थे, यीशु स्वयं ही उनक बीच में आ खड़ा हुआ, और उनसे कहा, ''तुम्हें शांति मिले।'' शिष्य डर गए। उन्होंने उसे भूत समझा। यीशु ने उनसे कहा कि वे किस कारण भयभीत व सन्देह में हैं। तब यीशु ने उनसे कहा कि क्या उनके पास कुछ खाने को है। उन्होंने उसे मछली दी और उसने उसे लेकर खाया। यीशु ने उन्हें बताया कि उसने उन्हें अपने पुनरुत्थान के बारे में कैसे सिखाया था। उसने पवित्रशास्त्र को समझने के लिए उनकी समझ खोल दी, ''यों लिखा है कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और यरूशलेम से लेकर सब जातियों मे मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।''

संदेह करनेवाला थोमा

जिस समय यीशु शिष्यों को दिखाई दिया तब थोमा उनके साथ नहीं था। उसने इस बारे में सुना था कि यीशु कैसे उन्हें दिखाई दिया था, परन्तु उसने उनसे कहा, ''जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के छेद न देख लूं, और कीलों के छेदों में उंगली न डाल लूँ और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूं, तब तक मैं विश्वास नहीं करूंगा।''

एक सप्ताह पश्चात, जब थोमा उनके साथ था, यीशु शिष्यों को फिर से दिखाई दिया। यीशु ने थोमा से कहा, 'अपनी उंगली यहां लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।'' थोपा ने उत्तर दिया, ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर! ''यीशु ने उससे कहा, ''तू ने मुझे देखा है, क्या इसलिये विश्वास किया है? धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया!''

तिबिरियास की झील पर यीशु

यीशु ने अपने सात शिष्यों पर स्वयं को तिबिरियास की झील के किनारे प्रगट किया। पतरस इन छ: शिष्यों के साथ था और उसने उनसे कहा कि वह मछली पकड़ने जा रहा है। इसलिए वे भी उसके साथ चल दिये। परन्तु उन्होंने रात भर

परिश्रम किया और कोई मछली न पकड़ी।

भोर होते ही यीशु किनारे पर आ खड़ा हुआ, तौभी शिष्यों ने नहीं पहचाना कि यह यीशु है। यीशु ने उनसे अपना जाल दूसरी ओर डालने को कहा। अतः उन्होंने वैसा ही किया और बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ीं। यूहन्ना ने शिष्यों से कहा, ''यह तो प्रभु है।'' पतरस पानी में कूद गया और यीशु से मिलने गया।

जब वे किनारे पहुंचे, यीशु ने कुछ पकी हुई मछली और रोटी उन्हें दी। भोजन के बाद यीशु ने उनसे कहा, ''हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इनसे बढ़कर मुझ से प्रेम करता है?'' उसने उत्तर दिया, ''हाँ!'' यीशु ने उससे कहा, ''मेरे मेमनों को चरा।'' यीशु ने उससे फिर पूछा और तीसरी बार फिर ऐसा कहा। पतरस को बहुत दुःख हुआ कि उसने तीसरी बार उससे ऐसा कहा। इसलिये उसने उससे कहा, ''हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है। तू जानता है कि मैं तुझसे प्रेम रखता हूं।'' यीशु ने उससे कहा, ''मेरी भेड़ों को चरा।''

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. इम्माऊस के मार्ग पर क्या हुआ था?
2. थोमा के कैसे विश्वास हुआ कि यह यीशु है?
3. जिस समय शिष्य कमरे में इकट्ठा थे यीशु ने उनसे क्या कहा?
4. यीशु और पतरस के बीच हुए विवाद से आप क्या समझते हैं?

क्रियाकलापः मृतकों में से जी उठने के पश्चात् पृथ्वी पर अपने चालीस दिन के समय में यीशु ने स्वयं को जिन स्थानों और लोगों पर प्रगट किया उनके नाम लिखें।

अध्याय 30: उसका स्वर्गरोहण

परिचय: कुछ दिनों बाद यीशु अपने उन पांच सौ अनुयायियों को दिखाई देता है जो उसके आदेश पर गलील की झील के निकट एक पहाड़ पर एकत्रित्रत थे। वह उन्हें महान आदेश देता है, जो मत्ती 28:19-20 में मिलता है। अपने पुनरुत्थान के पश्चात् चौथे दिन यीशु अपने शिष्यों को जैतून के पहाड़ पर लेकर जाता है और उन्हें आशीष देते हुए वह स्वर्ग पर उठा लिया जाता है।

बाइबल संदर्भ : मत्ती 28:16-20, लूका 24:45-51, प्रेरितों के काम 1:9-11

वृत्तांत:

महान आदेश

ग्यारह शिष्य यीशु से पहाड़ पर उसके निर्देशानुसार मिले। यीशु ने आकर उनसे कहा, ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ: और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने आज्ञा दी है, मनना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अनन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं।''

पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा

यीशु ने अपने शिष्यों को यरूशलेम न छोड़ने, परन्तु पिता ने जो प्रतिज्ञा की थी उसकी बाट जोहने को कहा। यीशु ने उनसे कहा, ''यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु ''थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।'' उन्होंने यीशु से पूछा, ''हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा?'' उसने उनसे कहा,'' उन समयों या कालों को जानना तुम्हारा काम नहीं। तुम यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।

यीशु स्वर्ग जाता है

जिस समय सभी एकत्रित लोग देख रहे थे, यीशु को उठा लिया गया, और एक बादल ने उसे उनकी दृष्टि से छिपा लिया। उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर देख रहे थे, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहने हुए उनके पास आ खड़े हुए। उन्होंने पूछा, ''हे गलीली पुरुषों, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को

जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।''

समूह विचार-विमर्श प्रश्नः

1. प्रेरितों के काम 1:8 के अनुसार, यीशु ने अपने शिष्यों को क्या बताया था?
2. यीशु के बादलों में उठाए जाने के समय वहां कितने लोग थे?
3. प्रेरितों के काम के अनुसार, स्वर्गदूत ने वहां एकत्रित लोगों से क्या कहा था?
4. यीशु के फिर से आने के बारे में क्या कहा गया है?

क्रियाकलापः एक कागज़ के टुकड़े पर लिखें, प्रेरितों के काम 1:8 के अनुसार आपका व्यक्तिगत ''यहूदिया, सामरिया और पृथ्वी की छोर'' कहाँ है, जहां आप सुसमाचार बताने की खोज में हैं।